तायफ़ की लड़ाई

यह लड़ाई वास्तव में हुनैन की लड़ाई का फैलाव है, चूंकि हवाज़िन व सक़ीफ़ के बहुत से हारे हुए लोग अपने जनरल कमांडर मालिक बिन औफ़ नसरी के साथ भाग कर तायफ़ ही आए थे और यहीं क़िलाबन्द हो गए थे, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुनैन से फ़ारिग़ होकर और जाराना में माले ग़नीमत जमा फ़रमा कर इसी माह 2 शव्वाल 08 हि० में तायफ़ का इरादा फ़रमाया।

इस मक़्सद के लिए ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० की सरदारी में एक हज़ार फ़ौज की अग्रिम टुकड़ी रवाना की गई, फिर आपने ख़ुद तायफ़ का रुख़ फ़रमाया।

रास्ते में नख़ला, यमानिया, फिर क़र्ने मनाज़िल, फिर लेह से गुज़र हुआ। लेह में मालिक बिन औफ़ का एक क़िला था। आपने उसे गिरवा दिया। फिर सफ़र जारी रखते हुए तायफ़ पहुंचे और तायफ़ क़िले के क़रीब पड़ाव डालकर के उसका घेराव कर लिया।

घेराव कुछ लम्बा खिंच गया। चुनांचे सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत है कि यह घेराव चालीस दिन तक जारी रहा। सीरत लिखने वालों में कुछ ने इसकी मुद्दत बीस दिन बताई है, कुछ ने दस दिन से ज़्यादा, कुछ ने अठारह दिन और कुछ ने पन्द्रह दिन।[1]

घेराव के दिनों में दोनों तरफ़ से तीरंदाज़ी और पत्थरबाज़ी की घटनाएं घटती रहीं, बल्कि पहले पहले जब मुसलमानों ने घेराव किया तो क़िले के अन्दर से उन पर इतनी तेज़ तीरंदाज़ी की गई कि मालूम होता था कि टिड्डी दल छाया हुआ है। इससे कई मुसलमान घायल हुए, बारह शहीद हुए और उन्हें अपना कैम्प उठाकर मौजूदा मस्जिदे तायफ़ के पास ले जाना पड़ा।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस स्थिति से निमटने के लिए, तायफ़ पर मनजनीक़ (तोप) गाड़ दिया और कई गोले फेंके, जिससे क़िले की दीवार में दराड़ पड़ गई और मुसलमानों की एक जमाअत दबाबा के अन्दर घुसकर आग लगाने के लिए दीवार तक पहुंच गई, लेकिन दुश्मन ने उन पर लोहे के जलते टुकड़े फेंके, जिससे मजबूर होकर मुसलमान दबाबा के नीचे से बाहर निकल आए, मगर बाहर निकले तो दुश्मन ने उन पर तीरों की वर्षा कर दी, जिससे कुछ मुसलमान

1. फ़त्हुल बारी 8/45

शहीद हो गए।

अल्लह के रसूल सल्ल० ने दुश्मन को पस्त करने के लिए एक और जंगी पालिसी के तौर पर हुक्म दिया कि अंगूर के पेड़ काटकर जला दिए जाएं। मुसलमानों ने ज़रा बढ़-चढ़कर कटाई कर दी। इस पर सक़ीफ़ ने अल्लाह और रिश्तों का वास्ता देकर कहा कि पेड़ों का काटना बन्द करें। आपने अल्लाह के वास्ते और रिश्तों की ख़ातिर हाथ रोक लिया।

घेराव के समय में अल्लाह के रसूल सल्ल० के ऐलान करने वाले ने ऐलान किया, जो दास क़िले से उतरकर हमारे पास आ जाए, वह आज़ाद है। इस ऐलान पर तेईस आदमी क़िले से आकर मुसलमनों में आ शामिल हुए।[1]

इन्हीं में हज़रत अबूबक्र भी थे। वह क़िले की दीवार पर चढ़कर एक चर्खी या घरारी की मदद से (जिसके ज़रिए रेहट से पानी खींचा जाता है) लटककर नीचे आए थे (चूंकि घरारी को अरबी में बक्र कहते हैं) इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी उपाधि अबूबक्र रख दी।

इन सब ग़ुलामों को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने आज़ाद कर दिया और हर एक को एक-एक मुसलमान के हवाले कर दिया कि उसे सामान जुटाए। यह घटना क़िले वालों के लिए बड़ी जानलेवा थी।

जब घेराव लम्बा हो गया और क़िला क़ाबू में आता नज़र न आया और मुसलमानों पर तीरों की वर्षा और गर्म लोहों की चोट पड़ती रही और इधर क़िले वालों ने साल भर के खाने-पीने का सामान भी जमा कर लिया, तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने नौफ़ुल बिन मुआविया वैली से मश्विरा तलब किया।

उसने कहा, लोमड़ी अपने भट्ट में घुस गई है। आप अगर उस पर डटे रहे तो पकड़ लेंगे और अगर छोड़कर चले गए तो तो वह आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने घेराव ख़त्म करने का फ़ैसला फ़रमा लिया और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के ज़रिए लोगों में ऐलान करवा दिया कि हम इनशाअल्लाह कल वापस होंगे।

लेकिन यह एलान सहाबा किराम को अच्छा न लगा, वे कहने लगे, हुंह! तायफ़ जीते बग़ैर वापस होंगे।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि अच्छा तो कल सुबह लड़ाई पर चलना है। चुनांचे दूसरे दिन लोग लड़ाई पर गए, लेकिन चोट खाने के सिवा

---

1. सहीह बुख़ारी 2/260

कुछ हासिल न हुआ तो इसके बाद आपने फिर फ़रमाया कि हम इनशाअल्लाह कल वापस होंगे।

इस पर लोगों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई और उन्होंने बिना कुछ कहे-सुने सफ़र का सामान बांधना शुरू कर दिया। यह स्थिति देखकर अल्लाह के रसूल सल्ल० मुस्कराते रहे।

इसके बाद जब लोगों ने डेरा-डंडा उठाकर कूच किया तो आपने फ़रमारया कि यों कहो,

'हम पलटने वाले, तौबा करने वाले, इबादतगुज़ार हैं और अपने रब का गुणगान करते हैं।'

कहा गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप सक़ीफ़ पर बद-दुआ करें।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! सक़ीफ़ को हिदायत दे और उन्हें रास्ते पर ले आ।

जेइर्राना में ग़नीमत का माल बांटा गया

अल्लाह के रसूल सल्ल० तायफ़ से घेराव ख़त्म करके वापस आए तो जेइर्राना में कई दिन तक ग़नीमत का माल बांटते रहे बग़ैर ठहरे रहे। इस देर का मक़्सद यह था कि हवाज़िन का प्रतिनिधिमंडल तौबा करके आपकी सेवा में आ जाए, तो उसने जो कुछ खोया है, सब ले जाए।

लेकिन देर होने के बावजूद जब आपके पास कोई न आया तो आपने माल को बांटना शुरू कर दिया, ताकि क़बीलों के सरदार और मक्का के भद्र पुरुष जो उचक-उचककर ताक रहे थे, उनकी ज़ुबान ख़ामोश हो जाए। मुअल्लफ़तुल क़ुलूब[1] का भाग्य आगे-आगे रहा और उन्हें बड़े-बड़े हिस्से दिए गए।

अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को चालीस औक़िया (कुछ कम छः किलो चांदी) और एक सौ ऊंट दिए गए। उसने कहा, मेरा बेटा यज़ीद ?

आपने उतना ही यज़ीद को भी दिया।

उसने कहा, और मेरा बेटा मुआविया ? आपने उतना ही मुआविया को भी। (यानी अकेले अबू सुफ़ियान को उसके बेटों समेत लगभग 18 किलो चांदी और तीन सौ ऊंट हासिल हो गए।)

1. यानी वे लोग जो नए-नए मुसलमान हुए हों और उनका दिल रखने के लिए उन्हें माली मदद दी जाए ताक वे इस्लाम पर मज़बूती से जम जाएं।

हकीम बिन हिज़ाम को एक सौ ऊंट दिए गए। उसने और सौ ऊंटों का सवाल किया, तो उसे फिर एक सौ ऊंट दिए गए। इसी तरह सफ़वान बिन उमैया को सौ ऊंट, फिर सौ ऊंट और फिर सौ ऊंट (यानी तीन सौ ऊंट दिए गए।)[1]

हारिस बिन कलदा को भी सौ ऊंट दिए गए और कुछ क़ुरैशी और ग़ैर क़ुरैशी सरदारों को सौ-सौ ऊंट दिए गए, कुछ दूसरों को पचास-पचास और चालीस-चालीस ऊंट दिए गए, यहां तक कि लोगों में मशहूर हो गया कि मुहम्मद सल्ल० इस तरह अनगिनत भेंट देते हैं कि उन्हें फ़क्र (निर्धनता) का डर ही नहीं। चुनांचे माल की तलब में बद्दू आप पर टूट पड़े और आपको एक पेड़ की ओर सिमटने पर मजबूर कर दिया।

संयोग से आपकी चादर पेड़ में फंसकर रह गई। आपने फ़रमाया, लोगो! मेरी चादर दे दो। उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर मेरे पास तहामा के पेड़ों की तायदाद के बराबर भी पशु हों तो उन्हें भी तुममें बांट दूंगा, फिर तुम न मुझे कंजूस पाओगे, न डरपोक, न झूठा।

इसके बाद आपने अपने ऊंट के बाज़ू में खड़े होकर उसकी कोहान से कुछ बाल लिए और चुटकी में रखकर ऊंचा करते हुए फ़रमाया, लोगो! अल्लाह की क़सम! मेरे लिए तुम्हारे फ़ै के माल में से कुछ भी नहीं, यहां तक कि आज भी नहीं, सिर्फ़ ख़ुम्स है और ख़ुम्स भी तुम पर ही पलटा दिया जाता है।

मुअल्ल-फ़-तुलकुलूब के देने के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० को हुक्म दिया कि ग़नीमत का माल और फ़ौज को इकट्ठा करके लोगों पर ग़नीमत के बंटवारे का हिसाब लगाएं। उन्होंने ऐसा किया तो एक एक फ़ौजी के हिस्से में चार-चार ऊंट और चालीस-चालीस बकरियां आईं। जो घुड़सवार था उसे बारह ऊंट और एक सौ बीस बकरियां मिलीं।

अंसार का दुख और बेचैनी

यह बांट एक हिक्मत भरी सियासत पर आधारित थी, लेकिन पहले पहल समझी न जा सकी, इसीलिए कुछ ज़ुबानों पर आपत्ति-शब्द आ गए।

इब्ने इस्हाक़ ने अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत की है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने क़ुरैश और अरब क़बीलों को वे उपहार दिए और अंसार को न दिया तो अंसार ने जी ही जी में पेच व ताब खाया और उनमें बहुत कुछ कानाफूसी हुई, यहां तक कि एक कहने वाले ने कहा, ख़ुदा की क़सम! अल्लाह

1. क़ाज़ी अयाज़ 1/86

के रसूल सल्ल० अपनी क़ौम से जा मिले हैं।

इसके बाद हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० आपके पास हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने इस फ़ै के हासिल शुदा माल में जो कुछ किया है उस पर अंसार अपने जी ही जी में आप पर पेच व ताब खा रहे हैं, आपने इसे अपनी क़ौम में बांट दिया। अरब क़बीलों को बड़े-बड़े उपहार दिए लेकिन अंसार को कुछ न दिया। आपने फ़रमाया, ऐ साद ! इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं भी तो अपनी क़ौम ही का एक आदमी हूं।

आपने फ़रमाया, अच्छा तो अपनी क़ौम को उस छौलदारी में जमा करो। साद ने निकलकर अंसार को उस छोलदारी में जमा किया। कुछ मुहाजिर भी आ गए, तो उन्हें दाख़िल होने दिया, फिर कुछ दूसरे लोग भी आ गए, तो उन्हें वापस कर दिया।

जब सब लोग जमा हो गए तो हज़रत साद रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि अंसार क़बीला आपके लिए जमा हो गया है। अल्लाह के रसूल सल्ल० उनके पास तशरीफ़ लाए, अल्लाह का गुणगान किया, फिर फ़रमाया—

अंसार के लोगो ! तुम्हारी यह क्या कानाफूसी है जो मेरी जानकारी में आई है ? और यह कैसी नाराज़ी है जो जी ही जी में तुमने मुझ पर महसूस की है ? क्या ऐसा नहीं कि मैं तुम्हारे पास इस हालत में आया कि तुम गुमराह थे, अल्लाह ने तुम्हें हिदायत दी और मुहताज थे, अल्लाह ने तुम्हें ग़नी बना दिया ? और आपस में दुश्मन थे, अल्लाह ने तुम्हारे दिल जोड़ दिए ?

लोगों ने कहा, क्यों नहीं, अल्लाह और उसके रसूल की बड़ी मेहरबानी है।

इसके बाद आपने फ़रमाया, अंसार के लोगो ! मुझे जवाब क्यों नहीं देते ?

अंसार ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! भला हम आपको क्या जवाब दें ? अल्लाह और उसके रसूल की दया-कृपा है।

आपने फ़रमाया, देखो, ख़ुदा की क़सम ! अगर तुम चाहो तो कह सकते हो—और सच ही कहोगे और तुम्हारी बात सच ही मानी जाएगी—कि आप हमारे पास इस हालत में आए कि आपको झुठलाया गया था, हमने आपकी पुष्टि की, आपको बे-यार व मददगार छोड़ दिया गया था, हमने आपकी मदद की, आपको धुत्कार दिया गया था, हमने आपको ठिकाना दिया। आप मुहताज थे,

हमने आपके ग़म धोए।

ऐ अंसार के लोगो! तुम अपने जी में दुनिया की एक तुच्छ घास के लिए नाराज़ हो गए, जिसके ज़रिए मैंने लोगों का दिल जोड़ा था, ताकि वे मुसलमान हो जाएं और तुमको तुम्हारे इस्लाम के हवाले कर दिया था? ऐ अंसार! क्या तुम इससे राज़ी नहीं कि लोग ऊंट और बकरियां लेकर जाएं और तुम रसूलुल्लाह सल्ल० को लेकर अपने डेरों में पलटो? उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, अगर हिजरत न होती, तो मैं भी अंसार ही का एक आदमी होता। अगर सारे लोग एक राह चलें और अंसार दूसरी राह चलें, तो मैं भी अंसार की ही राह पर चलूंगा। ऐ अल्लाह! अंसार पर रहम फ़रमा, और अंसार के बेटों और बेटों के बेटों (पोतों) पर।

अल्लाह के रसूल सल्ल० का यह ख़िताब सुनकर लोग इतना रोए कि दाढ़ियां भीग गईं और कहने लगे, हम राज़ी हैं कि हमारे हिस्से और नसीब में अल्लाह के रसूल सल्ल० हों। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० वापस हो गए और लोग भी बिखर गए।[1]

हवाज़िन के प्रतिनिधिमंडल का आना

ग़नीमत बंट जाने के बाद हवाज़िन का प्रतिनिधिमंडल मुसलमान होकर आ गया। ये कुल चौदह आदमी थे। इनका सरदार और प्रवक्ता ज़ुहैर बिन सुरद था और उनमें अल्लाह के रसूल सल्ल० का दूध शरीक चचा अबू बरक़ान भी था। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि उनमें उनके नौ प्रतिष्ठितजन थे। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया, बैअत की। इसके बाद आपसे बातें कीं और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! आपने जिन्हें क़ैद फ़रमाया है, उनमें मांएं और बहनें हैं और फूफियां और ख़ालाएं हैं और यही क़ौम के लिए रुसवाई की वजह होती हैं। (फ़त्हुल बारी 8/33) पस ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम पर दया करते हुए उपकार कीजिए। आप ऐसे आदमी हैं कि आपसे उम्मीद भी है और इन्तिज़ार भी है। आप उन औरतों पर उपकार कीजिए जिनका आप दूध पिया करते थे और उनके दूध के मोतियों से आपका मुंह भर जाया करता था। स्पष्ट रहे कि माओं वग़ैरह से मुराद रसूलुल्लाह सल्ल० की दूध शरीक मांएं, ख़ालाएं, फूफियां और बहनें हैं।

आपने फ़रमाया, मेरे साथ जो लोग हैं, उन्हें देख ही रहे हो और मुझे सच

---

1. इब्ने हिशाम 2/499, 500, ऐसी ही रिवायत सहीह बुख़ारी में भी है, 2/620, 621

बात ज़्यादा पसन्द है, इसलिए बताओ कि तुम्हें अपने बाल-बच्चे अधिक प्रिय हैं या माल ?

उन्होंने कहा, हमारे नज़दीक ख़ानदानी बरतरी से बढ़कर कोई चीज़ नहीं।

आपने फ़रमाया, अच्छा तो जब मैं ज़ुहर की नमाज़ पढ़ लूं तो तुम लोग उठकर कहना कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० को ईमान वालों की ओर सिफ़ारिशी बनाते हैं और ईमान वालों को अल्लाह के रसूल की ओर सिफ़ारिशी बनाते हैं कि आप हमारे क़ैदी हमें वापस कर दें।

इसके बाद जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो उन लोगों ने यही कहा। जवाब में आपने फ़रमाया, जहां तक इस हिस्से का ताल्लुक़ है जो मेरा है और बनी अब्दुल मुत्तलिब का है, तो वह तुम्हारे लिए है और मैं अभी लोगों से पूछे लेता हूं।

इस पर अंसार और मुहाजिरीन ने उठकर कहा, जो कुछ हमारा है, वह सब भी अल्लह के रसूल सल्ल० के लिए है।

इसके बाद अक़रअ बिन हाबिस ने कहा, लेकिन जो कुछ मेरा और बनू तमीम का है, वह आपके लिए नहीं और उऐना बिन हिस्न ने कहा कि जो कुछ मेरा और बनू फ़ज़ारा का है, वह भी आपके लिए नहीं और अब्बास बिन मरवास ने कहा, जो कुछ मेरा और बनू सुलैम का है, वह भी आपके लिए नहीं।

इस पर बनू सुलैम ने कहा, जी नहीं, जो कुछ हमारा है, वह भी अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए है।

अब्बास बिन मरवास ने कहा, तुम लोगों ने मेरी तौहीन कर दी।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, देखो, ये लोग मुसलमान होकर आए हैं। (और इसी ग़रज़ से) मैंने इनके क़ैदियों के बांटने में विलम्ब किया था। और अब मैंने इन्हें अधिकार दिया तो इन्होंने बाल-बच्चों के बराबर किसी चीज़ को नहीं समझा। इसलिए जिसके पास कोई क़ैदी हो और वह ख़ुशी से वापस कर दे, तो यह बहुत अच्छी राह है और जो कोई अपने हक़ को रोकना ही चाहता हो, तो वह भी इनके क़ैदी तो इन्हें वापस ही कर दे, हां, आगे जो सबसे पहले फ़ै का माल मिलेगा, उससे हम उस व्यक्ति को एक के बदले छः देंगे।

लोगों ने कहा, हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए ख़ुशी से देने को तैयार हैं।

आपने फ़रमाया, हम जान न सके कि आपमें से कौन राज़ी है और कौन नहीं ? इसलिए आप लोग वापस जाएं और आपके चौधरी लोग आपके मामले

को हमारे सामने पेश करें। इसके बाद सारे लोगों ने उनके बाल-बच्चे वापस कर दिए, सिर्फ़ उऐना बिन हिस्न रह गया, जिसके हिस्से में एक बुढ़िया आई थी, उसने वापस करने से इंकार कर दिया, लेकिन आख़िर में उसने भी वापस कर दिया और अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सारे क़ैदियों को एक-एक क़िब्ती चादर अता फ़रमाकर वापस कर दिया।[1]

उमरा और मदीने को वापसी

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ग़नीमत के माल के बांटने से फ़ारिग़ होकर जिइर्राना ही से उमरे का एहराम बांधा और उमरा अदा किया। इसके बाद अत्ताब बिन असीद को मक्के का ज़िम्मेदार बनाकर मदीना रवाना हो गए। मदीना वापसी 14 ज़ीक़ादा सन् 08 हि० को हुई।[2]

---

1. हवाज़िन के क़ैदियों की घटना के लिए देखिए, बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 5/201
2. तारीख़े इब्ने ख़ल्लदून 2/48, मक्का-विजय, हनैन और तायफ़ की इन लड़ाइयों और इनके दौरान होने वाली घटनाओं के लिए देखिए ज़ादुल मआद, 2/106-201, इब्ने हिशाम 2/389-501 सहीह बुख़ारी, मग़ाज़ी, ग़ज़वतुल फ़त्ह व औतास वत्ताइफ़ वग़ैरह 2/612-622, फ़त्हुल बारी 8/3-58,

मक्का विजय के बाद

इस लम्बे और कामियाब सफ़र से वापसी के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० मदीना में कुछ ज़्यादा ही ठहरे। इस बीच आप प्रतिनिधिमंडलों का स्वागत करते रहे, सरकारी अधिकारी भेजते रहे, दीन की दावत देनेवालों को रवाना फ़रमाते रहे और जिन्हें अल्लाह के दीन के दाख़िले में और अरब के अन्दर होनेवाली घटनाओं के सामने घुटने टेकने से इन्कार था, उन्हें आधीन बनाते रहे। इन बातों का संक्षेप में विवरण दिया जा रहा है।

ज़कात वसूल करने वाले

अब तक की बातों से मालूम हो चुका है कि मक्का विजय के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० सन् 08 हि० के अन्त में तशरीफ़ लाए थे। सन् 09 हि० के मुहर्रम के चांद के निकलते ही आपने क़बीलों के पास सदक़ों की वसूली के लिए ज़िम्मेदारों को भेजा, जिनकी सूची यह है—

अधिकारियों के नाम	वह क़बीला जिससे ज़कात वूसल करनी थी
1. उऐना बिन हिस्न	बनू तमीम
2. यज़ीद बिन हुसैन	अस्लम और ग़िफ़ार
3. इबाद बिन बशीर अशहली	सुलैम और मुज़ैना
4. राफ़ेअ बिन मुकैस	जुहैना
5. अम्र बिन आस	बनू फ़ज़ारा
6. ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान	बनू किलाब
7. बशीर बिन सुफ़ियान	बनू काब
8. इब्नुल्लुब्बीया अज़्दी	बनू ज़िबयान
9. मुहाजिर बिन उमैया	शहर सनआ (इनकी मौजूदगी में इनके ख़िलाफ़ अस्वद अनसी ने सनआ में बग़ावत की थी।)
10. ज़ियाद बिन लबीद	इलाक़ा हज़्र मौत
11. अदी बिन हातिम	त्वै और बनू असद
12. मालिक बिन नुवैरा	बनू हंज़ला
13. ज़बरक़ान बिन बद्र	बनू साद (की एक शाखा)

14. क़ैस बिन आसिम	बनू साद (की दूसरी शाखा)
15. अला बिन हज़रमी	इलाक़ा बहरैन
16. अली बिन अबी तालिब	इलाक़ा नजरान (ज़कात और जिज़या दोनों वसूल करने के लिए)

स्पष्ट रहे कि ये सारे ज़िम्मेदार मुहर्रम सन् 09 हि० ही में रवाना नहीं कर दिए गए थे, बल्कि कुछ-कुछ की रवानगी ख़ासी देर से उस वक़्त अमल में आई थी जब संबंधित क़बीलों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। अलबत्ता इस सोच-विचार के साथ इन ज़िम्मेदारों की रवानगी की शुरुआत सन् 09 हि० में हुई थी और इसी से सुलह हुदैबिया के बाद इस्लामी दावत की सफलता के फैलाव का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

बाक़ी रहा मक्का विजय के बाद का दौर तो इसमें लोग अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाख़िल हुए।

सराया

जिस तरह क़बीलों की ओर जकात वसूल करने के लिए ज़िम्मेदार भेजे गए, उसी तरह अरब प्रायद्वीप के आम इलाक़ों में अम्न व अमान के दौर-दौरे के बावजूद अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग फ़ौजी मुहिमें भी भेजनी पड़ीं। सूची यह है।

1. सरीया उऐना बिन हिस्न फ़ज़ारी (मुहर्रम 09 हि०)

उऐना को पचास सवारों की कमान देकर बनू तमीम के पास भेजा गया था। वजह यह थी कि बनू तमीम ने क़बीलों को भड़का कर जिज़ए के अदा करने से रोक दिया था। इस मुहिम में कोई मुहाजिर या अंसारी न था।

उऐना बिन हिस्न रात को चलते और दिन को छिपते हुए आगे बढ़े, यहां तक कि जंगल में बनू तमीम पर हल्ला बोल दिया। वे लोग पीठ फेरकर भागे और उनके ग्यारह आदमी, इक्कीस औरतें और तीस बच्चे गिरफ़्तार हुए, जिन्हें मदीना लाकर रमला बिन्त हारिस के मकान में ठहराया गया।

फिर उनके सिलसिले में बनू तमीम के दस सरदार आए और नबी सल्ल० के दरवाज़े पर जाकर यों आवाज़ लगाई, ऐ मुहम्मद ! हमारे पास आओ।

आप बाहर तशरीफ़ लाए तो ये लोग आपसे चिमट कर बातें करते लगे।

फिर आप उनके साथ ठहरे रहे, यहां तक कि ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद मस्जिदे नबवी के सेहन में बैठ गए।

उन्होंने दंभ और अभिमान में चूर होकर मुक़ाबले की ख़्वाहिश की और अपने ख़तीब (वक्ता) अतारिद बिन हाजिब को पेश किया। उसने भाषण दिया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस्लाम के वक्ता हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास को आदेश दिया और उन्होंने जवाब में भाषण दिया।

इसके बाद उन्होंने अपने कवि ज़बरक़ान बिन बद्र को आगे बढ़ाया और उसने कुछ गर्व भरे पद कहे। इसका जवाब इस्लामी शायर (कवि) हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० ने दिया।

जब दोनों वक्ता और दोनों कवि कह-सुन चुके तो अक़रअ बिन हाबिस ने कहा, उनका वक्ता हमारे वक्ता से ज़्यादा ज़ोरदार और उनका कवि हमारे कवि से ज़्यादा बेहतर है। उनकी आवाज़ें हमारी आवाज़ों से ज़्यादा ऊंची हैं और उनकी बातें हमारी बातों से अधिक श्रेष्ठ हैं। इसके बाद उन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। अल्लाह ने रसूल सल्ल० ने उन्हें बेहतरीन तोहफ़े दिए और उनकी औरतें और बच्चे उन्हें वापस कर दिए।[1]

2. सरीया क़ुत्बा बिन आमिर (सफ़र सन् 09 हि०)

यह सरीया तरबा के क़रीब तबाला के इलाक़े में क़बीला ख़सअम की एक शाखा की ओर रवाना किया गया। क़त्बा बीस आदमियों के साथ रवाना हुए। दस ऊंट थे जिन पर ये लोग बारी-बारी सवार होते थे।

मुसलमानों ने शबख़ून मारा जिस पर ज़ोरदार लड़ाई भड़क उठी और दोनों फ़रीक़ों के ख़ासे व्यक्ति घायल हुए। क़त्बा कुछ दूसरे व्यक्तियों सहित मारे गए, फिर भी मुसलमान भेड़-बकरियों और बाल-बच्चों को मदीना हांक लाए।

---

1. ग़ज़वा विशेषज्ञा का बयान यही है कि यह घटना मुहर्रम सन् 09 हि० में घटित हुई, लेकिन यह बात खुले तौर पर देखने की है, क्योंकि घटना का जायज़ा लेने से मालूम होता है कि अक़रअ बिन हाबिस इससे पहले मुसलमान नहीं हुए थे, हालांकि खुद सीरत लिखने वालों ही का बयान है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बनू हवाज़िन के क़ैदियों को वापस करने के लिए कहा तो उसी अक़रअ बिन हाबिस ने कहा कि मैं और बनू तमीम वापस न करेंगे। इसका तक़ाज़ा यह है कि अक़रअ बिन हाबिस इस मुहर्रम सन् 09 हि० वाली घटना से पहले मुसलमान हो चुके थे।

3. सरीया ज़हहाक बिन सुफ़ियान किलाबी (रबीउल अव्वल सन् 09 हि०)

यह सरीया बनू किलाब को इस्लाम की दावत देने के लिए रवाना किया गया था, लेकिन उन्होंने इंकार करते हुए लड़ाई छेड़ दी। मुसलमानों ने इन्हें हराया और उनका एक आदमी मार दिया।

4. सरीया अलक़मा बिन मजरज़ मुदलजी (रबीउल आख़र सन् 09 हि०)

इन्हें तीन सौ आदमी की कमान देकर जद्दा के तट की ओर रवाना किया गया। वजह यह थी कि कुछ हब्शी जद्दा के तट के क़रीब जमा हो गए थे और वह मक्का वालों के ख़िलाफ़ डाकाज़नी करना चाहते थे। अलक़मा समुद्र में उतरकर एक द्वीप तक बढ़ा। हब्शियों को मुसलमानों के आने का ज्ञान हुआ तो वह भाग खड़े हुए।[1]

5. सरीया अली बिन अबी तालिब (रबीउल अव्वल सन् 09 हि०)

इन्हें क़बीला तै के एक बुत को, जिसका नाम क़ल्स (कलीसा) था, ढाने के लिए भेजा गया था। आपकी सरदारी में एक सौ ऊंटों और पचास घोड़ों समेत डेढ़ सौ आदमी थे। झंडियां काली और फरेरा सफ़ेद था। मुसलमानों ने फ़ज्र के वक़्त हातिमताई के मुहल्ले पर छापा मारकर क़ल्स को ढा लिया और क़ैदियों, चौपायों और भेड़-बकरियों से हाथ भर लिए। इन्हीं क़ैदियों में हातिमताई की सुपुत्री भी थीं। अलबत्ता हातिम के सुपुत्र अदी मुल्क शाम भाग गए। मुसलमानों ने क़ल्स के ख़ज़ाने में तीन तलवारें और तीन ज़िरहें (कवच) पाईं और रास्ते में ग़नीमत का माल बांट दिया। अलबत्ता चुना माल अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए अलग कर दिया और आले हातिम को नहीं बांटा।

मदीना पहुंचे तो हातिम की सुपुत्री ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से दया का आवेदन करते हुए अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यहां जो आ सकता था, लापता है। बाप गुज़र चुके हैं और मैं बुढ़िया हूं। सेवा करने की ताक़त नहीं रखती। आप मुझ पर उपकार कीजिए, अल्लाह आप पर उपकार करेगा। आपने मालूम किया, तुम्हारे लिए कौन आ सकता था ?

1. फ़त्हुल बारी 8/59

बोलीं, अदी बिन हातिम।

फ़रमाया, वही जो अल्लाह और रसूल से भागा है। फिर आप आगें बढ़ गए। दूसरे दिन उसने फिर यही बात दोहराई और आपने फिर वही फ़रमाया जो कल फ़रमाया था। तीसरे दिन उसने फिर वही बात कही, तो आपने उपकार करते हुए उसे आज़ाद कर दिया। उस वक़्त आपके बाज़ू में एक सहाबी थे, शायद हज़रत अली रज़ि०—उन्होंने कहा, आप सल्ल० से सवारी का भी सवाल करो। उसने सवारी का सवाल किया। आपने सवारी जुटाने का भी आदेश दे दिया।

हातिम की सुपुत्री लौटकर अपने भाई अदी के पास शाम देश गई। जब उनसे मुलाक़ात हुई तो उन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल० के बारे में बतलाया कि आपने ऐसा कारनामा अंजाम दिया है कि तुम्हारे बाप भी वैसा नहीं कर सकते थे। उनके पास चाव या डर के साथ जाओ।

चुनांचे अदी किसी अमान या लेख के बिना आपकी सेवा में हाज़िर हो गए। आप उन्हें अपने घर ले गए और जब वह सामने बैठे तो आपने अल्लाह का गुणगान किया, फिर फ़रमाया, तुम किस चीज़ से भाग रहे हो? क्या ला इला-ह इल्लल्लाहु कहने से भाग रहे हो? अगर ऐसा है तो बताओ क्या तुम्हें अल्लाह के सिवा किसी और माबूद का ज्ञान है?

उन्होंने कहा, नहीं।

फिर आपने कुछ देर बातें कीं, इसके बाद फ़रमाया, अच्छा, तुम इससे भागते हो कि अल्लाहु अक्बर कहा जाए तो क्या तुम अल्लाह से बड़ी कोई चीज़ जानते हो?

उन्होंने कहा, नहीं।

आपने फ़रमाया, यहूदियों पर अल्लाह के ग़ज़ब की मार है और ईसाई गुमराह हैं।

उन्होंने कहा, तो मैं एक पहलू मुसलमान हूं। यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० का चेहरा मारे ख़ुशी से चमक उठा और उसके बाद आपके हुक्म से उन्हें एक अंसारी के यहां ठहरा दिया गया और वह सुबह व शाम आपकी सेवा में हाज़िर होते रहे।[1]

इब्ने इस्हाक़ ने हज़रत अदी से यह भी रिवायत की है कि जब नबी सल्ल०

1. ज़ादुल मआद 2/205

ने उन्हें अपने सामने अपने घर में बिठाया, तो फ़रमाया, ओ. . . अदी बिन हातिम ! क्या तुम रकोसी न थे ?

अदी कहते हैं, मैंने कहा, क्यों नहीं।

आपने फ़रमाया, क्या तुम अपनी क़ौम में ग़नीमत के माल का चौथाई लेने पर अमल नहीं करते थे ?

मैंने कहा, क्यों नहीं।

आपने फ़रमाया, हालांकि यह तो तुम्हारे दीन में हलाल नहीं।

मैंने कहा, हां, ख़ुदा की क़सम ! और इसी से मैंने जान लिया कि आप अल्लाह के भेजे हुए रसूल हैं, क्योंकि आप वह बात जानते हैं जो जानी नहीं जाती।[1]

मुस्नद अहमद की रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अदी ! इस्लाम लाओ, सालिम (सुरक्षित) रहोगे।

मैंने कहा, मैं तो ख़ुद एक दीन का मानने वाला हूं।

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हारा दीन तुमसे बेहतर तौर पर जानता हूं।

मैंने कहा, आप मेरा दीन मुझसे बेहतर तौर पर जानते हैं ?

आपने फ़रमाया, हां, क्या ऐसा नहीं कि तुम रकोसी हो और फिर भी अपनी क़ौम के ग़नीमत के माल का चौथाई खाते हो ?

मैंने कहा, क्यों नहीं।

आपने फ़रमाया, यह तुम्हारे दीन के हिसाब से हलाल नहीं। आपकी इस बात पर मुझे सर झुकाना पड़ा।[2]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अदी की रिवायत है कि मैं नबी सल्ल० की ख़िदमत में बैठा था कि एक आदमी ने आकर उपवास की शिकायत की। फिर दूसरे आदमी ने आकर डकैती की शिकायत की। आपने फ़रमाया, अदी ! तुमने हियरा देखा है ? अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई, तो तुम देख लोगे कि एक परदा नशीन औरत हियरा से चलकर आएगी, ख़ाना काबा का तवाफ़ करेगी और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा और अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम देखोगे कि आदमी चुल्लू भरकर सोना या चांदी निकालेगा और ऐसे आदमी को खोजेगा, जो उसे क़ुबूल कर ले, तो कोई उसे क़ुबूल करने वाला न मिलेगा।

---

1. इब्ने हिशाम 2/581
2. मुस्नद अहमद 4/257, 378

उसी रिवायत के आख़िर में हज़रत अदी का बयान है कि मैंने देखा कि परदानशीन औरत हियरा से चलकर ख़ाना काबा का तवाफ़ करती है और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर नहीं और मैं खुद उन लोगों में था जिन्होंने किसरा बिन हुरमुज़ के ख़ज़ाने जीते और अगर तुम लोगों की ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम लोग वह चीज़ भी देख लोगे जो नबी अबुल क़ासिम सल्ल० ने फ़रमाई थी कि आदमी चुल्लू भरकर सोना या चांदी निकालेगा। (आख़िर तक)[1]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/507, हदीस न० 1413, 1417, 3595, 6023, 6539, 6540, 6573, 7443, 7512,

ग़ज़वा तबूक

मक्का विजय की लड़ाई सत्य-असत्य की एक निर्णायक लड़ाई थी। इस लड़ाई के बाद अरबों के नज़दीक अल्लाह के रसूल सल्ल० की रिसालत में कोई सन्देह बाक़ी नहीं रह गया था, इसीलिए परिस्थिति यकायक बदल गई और लोग अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाख़िल हो गए। इसका कुछ अन्दाज़ा उस विवेचन से भी हो सकेगा जिन्हें हम प्रतिनिधिमंडलों के अध्याय में देंगे और कुछ अन्दाज़ा उस तायदाद से भी लगाया जा सकता है जो हज्जतुल विदाअ में ज़ाहिर हुई थी।

बहरहाल अब भीतरी परेशानियों का लगभग अन्त हो चुका था और मुसलमान ख़ुदा की शरीअत आम करने और इस्लाम की दावत फैलाने के लिए यकसू हो गए थे।

ग़ज़वे (लड़ाई) की वजह

मगर अब एक ऐसी ताक़त का रुख़ मदीना की ओर हो चुका था जो बिना किसी औचित्य के मुसलमानों से छेड़-छाड़ कर रही थी। यह ताक़त रूमियों की थी जो उस वक़्त धरती पर सबसे बड़ी सैनिक शक्ति की हैसियत रखती थी।

पिछले पन्नों में यह बताया जा चुका है कि इस छेड़-छाड़ की शुरूआत शुरहबील बिन अम्र ग़स्सानी के हाथों अल्लाह के रसूल सल्ल० के दूत हज़रत हारिस बिन उमैर अज़दी रज़ि० के क़त्ल से हुई, जबकि वह अल्लाह के रसूल सल्ल० का सन्देश लेकर बुसरा के शासक के पास तशरीफ़ ले गए थे।

यह भी बताया जा चुका है कि नबी सल्ल० ने इसके बाद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा की सरदारी में एक फ़ौज भेजी थी जिसने रूमियों से मूता की धरती पर भयानक टक्कर ली, मगर यह फ़ौज उन दंभी ज़ालिमों से बदला लेने में सफल न हुई, अलबत्ता इसने दूर व नज़दीक के अरब वासियों को बहुत अच्छी तरह प्रभावित किया।

क़ैसर रूम इन प्रभावों को और इनके नतीजे में अरब क़बीलों के अन्दर रूम से मुक्ति और मुसलमानों के प्रति समर्थन और सहानुभूति की भावनाओं को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। उसके लिए यक़ीनन यह एक 'ख़तरा' था जिसका हर अगला क़दम उसकी सीमा की ओर बढ़ रहा था और अरब से मिली

हुई सीमा शाम के लिए चुनौती बनती जा रही थी। इसलिए क़ैसर ने सोचा कि मुसलमानों की ताक़त को एक महान और अपराजित शक्ति बनने से पहले-पहले कुचल देना ज़रूरी है, ताकि रूम से मिले हुए अरब इलाक़ों में 'फ़िले' और 'हंगामे' सर न उठा सकें।

इन परिस्थितियों को देखते हुए अभी मूता की लड़ाई को एक साल भी न हुआ था कि क़ैसर ने रूमी निवासियों और अपने आधीन अरबों यानी आले ग़स्सान आदि पर आधारित सेना को जुटाना शुरू कर दिया और एक ख़ूनी और निर्णायक लड़ाई की तैयारी में लग गया।

रूम व ग़स्सान की तैयारियों की आम ख़बरें

इधर मदीना में लगातार ये ख़बरें पहुंच रही थीं कि रूमी मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक निर्णायक लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं। इसकी वजह से मुसलमानों को हर वक़्त खटका लगा रहता था और उनके कान किसी भी आवाज़ को सुनकर खड़े हो जाते थे, वे समझते थे कि रूमियों का रेला आ गया।

इसका अन्दाज़ा इस घटना से होता है कि इसी सन् 09 हि० में नबी सल्ल० ने अपनी बीवियों से नाराज़ होकर एक महीने के लिए ईला[1] कर लिया था और उन्हें छोड़कर ऊपर के एक हिस्से में अलग हो गए थे।

सहाबा किराम रज़ि० को शुरू में वास्तविकता मालूम न हो सकी थी। उन्होंने समझा कि नबी सल्ल० ने तलाक़ दे दी और इसकी वजह से सहाबा किराम में ज़बरदस्त रंज व ग़म फैल गया था। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० इस घटना का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरा एक अंसारी साथी था। जब मैं (नबी सल्ल० की सेवा में) मौजूद न रहता, तो वह मेरे पास ख़बर लाता और जब वह मौजूद न होता तो मैं उसके पास ख़बर ले जाता। हम दोनों ही मदीना में रहते थे, एक दूसरे के पड़ोसी थे और बारी-बारी नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िरी दिया करते थे। उस ज़माने में हमें शाह ग़स्सान का ख़तरा लगा हुआ था। हमें बताया गया था कि वह हम पर धावा बोलना चाहता है और उसकी वजह से

---

1. औरत के पास न जाने की क़सम खा लेना। अगर यह क़सम चार माह या इससे कम मुद्दत के लिए है तो उस पर शरई एतबार से कोई हुक्म लागू न होगा और अगर यह ईला चार महीने से ज़्यादा मुद्दत के लिए है तो फिर चार माह पूरे होते ही शरई अदालत हस्तक्षेप करेगी कि शौहर या तो बीवी को बीवी की तरह रखे या उसे तलाक़ दे दे। कुछ सहाबा के अनुसार सिर्फ़ चार माह की मुद्दत गुज़र जाने से तलाक़ पड़ जाएगी।

हमारे सीने भरे हुए थे। एक दिन अचानक मेरा अंसारी साथी दरवाज़ा पीटने लगा और कहने लगा, खोलो-खोलो।

मैंने कहा, क्या ग़स्सानी आ गए?

उसने कहा, नहीं, बल्कि इससे भी बड़ी बात हो गई। अल्लाह के रसूल सल्ल० अपनी बीवियों से अलग हो गए हैं।[1]

एक दूसरी रिवायत में यों है कि हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हममें चर्चा थी कि आले ग़स्सान हम पर चढ़ाई करने के लिए घोड़ों की नाल लगवा रहे हैं। एक दिन मेरा साथी अपनी बारी पर गया और इशा के वक़्त वापस आकर मेरा दरवाज़ा बड़े ज़ोर से पीटा और कहा, क्या वह सो गए हैं? मैं घबराकर बाहर आया।

उसने कहा, बड़ी घटना हो गई।

मैंने कहा, क्या हुआ? क्या ग़स्सानी आ गए?

उसने कहा, नहीं, बल्कि इससे भी बड़ी और लंबी घटना, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है।[2]

इससे उस स्थिति की संगीनी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है जो उस वक़्त रूमियों की ओर से मुसलमानों की नज़रों में थी। इसमें और वृद्धि मुनाफ़िक़ों की उन जोड़-तोड़ वाली नीतियों ने की जो उन्होंने रूमियों की तैयारी की ख़बरें मदीना पहुंचने के बाद शुरू कीं। चुनांचे इसके बावजूद कि ये मुनाफ़िक़ देख चुके थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० हर क्षेत्र में सफल हैं और धरती की किसी ताक़त से नहीं डरते, बल्कि जो रुकावटें आपकी राह में रोक बनती हैं, वे चूर-चूर हो जाती हैं, इसके बावजूद इन मुनाफ़िक़ों ने यह उम्मीद बांध ली कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ उन्होंने अपने सीनों में जो बहुत पुरानी आरज़ूएं छिपा रखी है और नतीजे का वे मुद्दत से इंतिज़ार कर रहे हैं, अब उसे सामने आने का समय क़रीब आ गया है।

अपने इसी सपने की बुनियाद पर उन्होंने एक मस्जिद की शक्ल में, जो 'मस्जिदे ज़ुरार' के नाम से मशहूर हुई, फ़ित्नों और षड्यंत्रों का एक केन्द्र स्थापित किया जिसकी बुनियाद ईमान वालों के बीच फूट डालने वालों के लिए घात की जगह जुटाने के नापाक मक़्सद पर रखी और अल्लाह के रसूल सल्ल० से गुज़ारिश की कि आप उसमें नमाज़ पढ़ा दें। इससे मुनाफ़िक़ों का मक़्सद यह था

---

1. सहीह बुख़ारी 2/730
2. वही, सहीह बुख़ारी 1/334

कि वे ईमान वालों को धोखे में रखें और उन्हें पता न लगने दें कि इस मस्जिद में उनके ख़िलाफ़ षड्यंत्र के जाल बुने जा रहे हैं और मुसलमान इस मस्जिद में आने-जाने वालों पर नज़र न रखें।

इस तरह यह मस्जिद मुनाफ़िक़ों और उनके बाहरी मित्रों के लिए एक शांत घोंसले और मठ का काम दे। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस 'मस्जिद' में नमाज़ के अदा करने को लड़ाई से वापसी तक के लिए स्थगित किया, क्योंकि आप तैयारी में लगे हुए थे। इस तरह मुनाफ़िक़ अपने मक़सद में कामियाब न हो सके और अल्लाह ने उनका परदा वापसी से पहले ही फाड़ दिया। चुनांचे आपने ग़ज़्वे से वापस आकर इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के बजाए उसे ढा दिया।

रूम व ग़स्सान की तैयारियों की ख़ास ख़बरें

इन परिस्थितियों और ख़बरों का मुसलमान सामना कर ही रहे थे कि उन्हें अचानक मुल्क शाम से तेल लेकर आनेवाले नब्तियों[1] से मालूम हुआ कि हिरक़्ल ने चालीस हज़ार सिपाहियों की एक भारी फ़ौज तैयार की है और रूम के महान कमांडर को उसकी कमान सौंपी है। अपने झंडे तले ईसाई क़बीलों लख़्म व जज़ाम वग़ैरह को भी जमा कर लिया है और उनका अग्रिम दस्ता बलक़ा पहुंच चुका है। इस तरह एक बड़ा ख़तरा साक्षात मुसलमानों के सामने आ गया।

स्थिति जटिल होती गई

फिर जिस बात से स्थिति की जटिलता और बढ़ रहा थी, वह यह थी कि ज़माना तेज़ गर्मी का था, लोग तंगी और अकाल की अग्नि-परीक्षा से गुज़र रहे थे। सवारियां कम थीं, फल पक चुके थे, इसलिए लोग फल और साए में रहना चाहते थे, वे तुरन्त चलना नहीं चाहते थे, इन सब पर आगे की बात यह कि सफ़र की दूरी और रास्ते की पेचीदगी और कठिनाई अलग थी।

अल्लाह के रसूल सल्ल० की ओर से एक क़तई क़दम उठाने का फ़ैसला

लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० परिस्थितियों और तब्दीलियों का अध्ययन कहीं ज़्यादा बारीकी से कर रहे थे। आप समझ रहे थे कि अगर आपने इन

1. नाबित बिन इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल, जिन्हें एक वक़्त ऐसा भी मिला कि उत्तरी हिजाज़ में उन्हें बड़ी तरक़्क़ी हासिल थी, लेकिन पतन के बाद धीरे-धीरे ये लोग मामूली किसानों और व्यापारियों की श्रेणी में आ गए।

निर्णायक क्षणों में रूमियों से लड़ाई लड़ने में काहिली और सुस्ती से काम लिया, रूमियों को मुसलमानों के असर वाले इलाक़ों में घुसने दिया और वे मदीना तक बढ़ और चढ़ आए, तो इस्लामी दावत पर उसके बड़े बुरे प्रभाव पड़ेंगे। मुसलमानों की फ़ौज की साख उखड़ जाएगी और वह अज्ञानता जो हुनैन की लड़ाई में करारी चोट लगने के बाद अन्तिम सांस ले रही है, दोबारा ज़िंदा हो जाएगी और मुनाफ़िक़ जो मुसलमानों की परेशानियों का इंतिज़ार कर रहे हैं और अबू आमिर फ़ासिक़ के ज़रिए शाह रूम से सम्पर्क बनाए हुए हैं, पीछे से ठीक उस वक़्त मुसलमानों की फ़ौज में ख़ंजर घोंप देंगे, जब आगे से रूमियों का रेला उन पर ख़ौफ़नाक हमला कर रहा होगा, इस तरह वे बहुत सारी कोशिशें बेकार चली जाएंगी जो आपने और आपके साथियों ने इस्लाम के प्रचार-प्रसार में की थीं और वे बहुत सारी सफलताएं विफलताओं में बदल जाएंगी जो लम्बी और ख़ूनी लड़ाइयों और लगतार फ़ौजी दौड़-धूप के बाद हासिल की गई थीं।

अल्लाह के रसूल सल्ल० इन नतीजों को अच्छी तरह समझ रहे थे, इसलिए तंगी और परेशानी के बावजूद आपने तै किया कि रूमियों को दारुल इस्लाम (मदीना) की ओर बढ़ने की मोहलत दिए बिना ख़ुद उनके इलाक़े और उनकी सीमाओं में घुसकर उनके ख़िलाफ़ एक निर्णायक लड़ाई लड़ी जाए।

रूमियों से लड़ाई की तैयारी का एलान

यह मामला तै कर लेने के बाद आपने सहाबा किराम रज़ि० में एलान फ़रमा दिया कि लड़ाई की तैयारी करें। अरब के क़बीलों और मक्का वालों को भी सन्देश दिया कि लड़ाई के लिए निकल पड़ें। आपका तरीक़ा था कि जब किसी ग़ज़वे का इरादा फ़रमाते तो किसी और ही दिशा का दिखावा करते, लेकिन स्थिति की जटिलता और साधनों की कमी की वजह से अब की बार आपने साफ़-साफ़ एलान फ़रमा दिया कि रूमियों से लड़ने का इरादा है, ताकि लोग पूरी तैयार कर लें।

आपने इस मौक़े पर लोगों को जिहाद पर भी उभारा और लड़ाई पर उभारने के लिए सूरः तौबा का एक टुकड़ा उतरा। साथ ही आपने सदक़ा व ख़ैरात की बड़ाई बयान की और अल्लाह की राह में अपना सबसे अच्छा ख़र्च करने पर उभारा।

ग़ज़वे की तैयारी के लिए मुसलमानों की दौड़-धूप

सहाबा किराम ने ज्यों ही अल्लाह के रसूल सल्ल० का इर्शाद सुना कि आप

रूमियों से लड़ाई की दावत दे रहे हैं, झट उसे पूरा करने के लिए दौड़ पड़े और पूरी तेज़ रफ़्तारी से लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। क़बीले और बिरादरियां हर ओर से मदीना में आना शुरू हो गईं और सिवाए उन लोगों के जिनके दिलों में निफ़ाक़ की बीमारी थी, किसी मुसलमान ने इस ग़ज़वे में पीछे रहना गवारा न किया। अलबत्ता तीन मुसलमान इसके अपवाद हैं कि सही ईमान वाले होने के बावजूद उन्होंने ग़ज़वे में शिर्कत न की। हालत यह थी कि ज़रूरतमंद और फ़ाक़ामस्त लोग आते और अल्लाह के रसूल सल्ल० से दरख़्वास्त करते कि उनके लिए सवारी जुटा दें, ताकि वे भी रूमियों से होनेवाली इस लड़ाई में शिर्कत कर सकें और जब आप उसके सामने उज़्र रखते—

'मैं तुम्हें सवार करने के लिए कुछ नहीं पाता तो वे इस हालत में वापस होते कि उनकी आंखों से आंसू जारी होते कि वे ख़र्च करने के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं।' (9 : 79)

इसी तरह मुसलमानों ने सदक़ा व ख़ैरात करने में भी एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश की।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने मुल्क शाम के लिए एक क़ाफ़िला तैयार किया था, जिसमें पालान और कजावे समेत दो सौ ऊंट थे और दो औक़िया (लगभग साढ़े उनतीस किलो) चांदी थी। आपने यह सब सदक़ा कर दिया। इसके बाद फिर एक सौ ऊंट पालान और कजावे समेत सदक़ा किया।

इसके बाद एक हज़ार दीनार (लगभग साढ़े पांच किलो सोने के सिक्के) आए और उन्हें नबी सल्ल० की गोद में बिखेर दिया। अल्लाह के रसूल सल्ल० उन्हें उलटते जाते थे और फ़रमाते जाते थे। आज के दिन उस्मान जो भी करें, उन्हें नुक़्सान न होगा।[1]

इसके बाद हज़रत उस्मान रज़ि० ने फिर सदक़ा किया, यहां तक कि उनके सदक़े की मात्रा नक़दी के अलावा नौ सौ ऊंट और एक सौ घोड़े तक जा पहुंची।

इधर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० दो सौ औक़िया (लगभग साढ़े 29 किलो) चांदी ले आए। हज़रत अबूबक्र ने अपना पूरा माल सेवा में हाज़िर कर दिया और बाल-बच्चों के लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के सिवा कुछ न छोड़ा। उनके सदक़े की मात्रा चार हज़ार दिरहम थी और सबसे पहले यही अपना सदक़ा लेकर तशरीफ़ लाए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने अपना आधा

---

1. जामेअ तिर्मिज़ी, मनाक़िब उस्मन बिन अफ़्फ़ान, 2/111

माल ख़ैरात किया। हज़रत अब्बास रज़ि० बहुत सा माल लाए। हज़रत तलहा रज़ि०, साद बिन उबादा रज़ि० और मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० भी काफ़ी माल लाएं। हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि० नव्वे वसक़ (यानी 13½ हज़ार किलो, 13½ टन) खजूर लेकर आए।

बाक़ी सहाबा रज़ि० एक एक करके थोड़े-ज़्यादा सदक़ात ले आए, यहां तक कि किसी किसी ने एक मुद्द या दो मुद्द सदक़ा किया कि वे इससे ज़्यादा की ताक़त नहीं रखते थे। औरतों ने भी हार, बाजूबन्द, पाज़ेब, बाली और अंगूठी वग़ैरह जो कुछ हो सका, आपकी ख़िदमत में भेजा, किसी ने भी अपना हाथ न रोका और कंजूसी से काम न लिया। सिर्फ़ मुनाफ़िक़ थे जो सदक़ों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेनेवालों पर ताने कसते थे। उनका मज़ाक़ उड़ाते थे (कि यह एक खजूर से क़ैसर का राज्य जीतने चले हैं।) (9 : 79)

इस्लामी फ़ौज तबूक के रास्ते में

इस धूमधाम, जोश व ख़रोश और भाग-दौड़ के नतीजे में फ़ौज तैयार हो गई तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत मुहममंद बिन मस्लमा रज़ि० से और कहा जाता है कि सबाअ बिन अरफ़ाता को मदीना का गवर्नर बनाया और हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को अपने बाल-बच्चों की देखभाल के लिए मदीना ही में रहने का हुक्म दिया, लेकिन मुनाफ़िक़ों ने उन पर ताने कसे, इसलिए वह मदीना से निकल पड़े। और अल्लाह के रसूल सल्ल० से जा मिले।

लेकिन आपने उन्हें फिर मदीना वापस कर दिया और फ़रमाया, क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं कि मुझसे तुम्हें वही निस्बत हो जो हज़रत मूसा से हज़रत हारून को थी। अलबत्ता मेरे बाद कोई नबी न होगा।

बहरहाल अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस इन्तिज़ाम के बाद उत्तर की ओर कूच फ़रमाया। (नसई की रिवायत के मुताबिक़ यह जुमेरात का दिन था) मंज़िल तबूक थी। लेकिन फ़ौज बड़ी थी। इससे पहले मुसलमानों की इतनी बड़ी फ़ौज कभी न जुटी थी, इसलिए मुसलमान हर चंद माल ख़र्च करने के बावजूद फ़ौज को पूरी तरह तैयार न कर सके थे, बल्कि सवारी और तोशे की बड़ी कमी थी, चुनांचे अठारह-अठारह आदमियों पर एक-एक ऊंट था, जिस पर ये लोग बारी-बारी सवार होते थे। इसी तरह खाने के लिए कभी-कभी पेड़ों की पत्तियां इस्तेमाल करनी पड़ती थीं, जिससे होंठों में सूजन आ गई थी, मजबूरन ऊंटों को, कम होने के बावजूद, ज़िब्ह करना पड़ा, ताकि उसके मेदे और आंतों के अन्दर जमा शुदा पानी और तरी पी जा सके। इसीलिए इसका नाम 'तंगी की फ़ौज' पड़ गया।

तबूक के रास्ते में फ़ौज का गुज़र हिज्र यानी समूद के एरिया से हुआ। समूद वह क़ौम थी, जिसने वादिल क़ुरा के अन्दर चट्टानें तराश-तराशकर मकान बनाए थे। सहाबा किराम रज़ि० ने वहां के कुंएं से पानी ले लिया था, लेकिन जब चलने लगे तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, तुम यहां का पानी न पीना और इससे नमाज़ के लिए वुज़ू न करना और जो आटा तुम लोगों ने गूंध रखा है, उसे जानवरों को खिला दो, ख़ुद न खाओ। आपने यह भी हुक्म दिया कि लोग उस कुंएं से पानी लें, जिससे सालेह अलै० की ऊंटनी पानी पिया करती थी।

बुख़ारी और मुस्लिम में इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि जब नबी सल्ल० हिज्र (समूद के इलाक़े) से गुज़रे तो फ़रमाया, इन ज़ालिमों के रहने की जगहों में दाख़िल न होना कि कहीं तुम पर भी वही मुसीबत न आ पड़े जो उन पर आई थी, हां, मगर रोते हुए। फिर आपने अपना सर ढका और तेज़ी से चलकर घाटी पार कर गए।[1]

रास्ते में फ़ौज को पानी की सख़्त ज़रूरत पड़ी, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० से शिकवा किया। आपने अल्लाह से दुआ की। अल्लाह ने बादल भेज दिया। वर्षा हुई, लोगों ने सैर होकर पानी पिया और ज़रूरत का पानी लाद भी लिया।

फिर जब तबूक के क़रीब पहुंचे, तो आपने फ़रमाया, कल तुम लोग तबूक के चश्मे पर पहुंच जाओगे, लेकिन चाश्त से पहले नहीं। इसलिए जो व्यक्ति वहां पहुंचे उसके पानी को हाथ न लगाए, यहां तक कि मैं आ जाऊं।

हज़रत मुआज़ रज़ि० का बयान है कि हम लोग पहुंचे तो वहां दो आदमी पहले ही पहुंच चुके थे। चश्मे से थोड़ा-थोड़ा पानी आ रहा था।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मालूम किया कि क्या तुम दोनों ने उसके पानी को हाथ लगाया है?

उन्होंने कहा, हां।

आपने इन दोनों से जो कुछ अल्लाह ने चाहा, फ़रमाया, फिर चश्मे से चुल्लू के ज़रिए थोड़ा-थोड़ा पानी निकाला, यहां तक कि कुछ जमा हो गया। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसमें अपना चेहरा और हाथ धुला और उसे चश्मे में उंडेल दिया। इसके बाद चश्मे से ख़ूब पानी आया। सहाबा किराम ने जी भरकर पीया।

---

1. सहीह बुख़ारी, नुज़ूलुन्नबी सल्ल० अल-हिज्र 2/637

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मुआज़! अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम इस जगह को बाग़ों से लहलहाता देखोगे।[1]

रास्त ही में, या तबूक पहुंचकर, रिवायतों में मतभेद है, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, आज तुम पर तेज़ आंधी चलेगी, इसलिए कोई न उठे और जिसके पास ऊंट हो, वह उसकी रस्सी को मज़बूती से बांध दे। चुनांचे तेज़ आंधी चली। एक आदमी खड़ा हो गया तो आंधी ने उसे उड़ा कर त्वै की दो पहाड़ियों के पास फेंक दिया।[2]

रास्ते में अल्लाह के रसूल सल्ल० का तरीक़ा था कि आप ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें इकट्ठा और मग़रिब और इशा की नमाज़ें इकट्ठा पढ़ते थे। पहले भी जमा करते थे और बाद में भी। (पहले जमा करने का मतलब यह है कि ज़ुहर और अस्र दोनों ज़ुहर के वक़्त में और मग़रिब और इशा, दोनों मग़रिब के वक़्त में पढ़ी जाएं। और बाद में जमा करने का मतलब यह है कि ज़ुहर और अस्र दोनों अस्र के वक़्त में और मग़रिब और इशा दोनों इशा के वक़्त में पढ़ी जाएं।)

इस्लामी फ़ौज तबूक में

इस्लाम फ़ौज उतरकर तबूक में ठहरी। वह रूमियों से दो-दो हाथ करने को तैयार थी, फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़ौजियों को सम्बोधित करके बड़ा असरदार भाषण दिया, नपे-तुले और सुगढ़ शब्दों में अपनी बात कही, दुनिया और आख़िरत की भलाई पर उभारा, अल्लाह के अज़ाब से डराया और उसके इनामों की ख़ुशख़बरी दी। इस तरह फ़ौज का हौसला बुलन्द हो गया।

उनमें तोशे, ज़रूरतें और सामान की कमी की वजह से जो कमी और ख़राबी थी, वह इस तरह दूर हो गई। दूसरी ओर रूम और उसके मित्रों का यह हाल हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के आने की ख़बर सुनकर उनके भीतर भय की लहर दौड़ गई, उन्हें आगे बढ़ने और टक्कर लेने की हिम्मत न हुई और वे देश के भीतर अलग-अलग शहरों में बिखर गए। उनके इस तरीक़े का असर अरब प्रायद्वीप के भीतर और बाहर मुसलमानों की फ़ौज की साख पर बहुत अच्छा पड़ा और मुसलमानों ने ऐसे-ऐसे अहम सियासी फ़ायदे हासिल किए कि लड़ाई की शक्ल में उसका हासिल करना आसान न होता। विवरण इस तरह है—

---

1. मुस्लिम, रावी—मुआज़ बिन जबल 2/246
2. वही,

ऐला के हाकिम यहन्ना बिन रूबा ने आपकी सेवा में हाज़िर होकर जिज़या का अदा करना मंज़ूर किया और समझौता कर लिया। जरबा और अज़रूह के निवासियों ने भी नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर जिज़या देना मंज़ूर किया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके लिए एक काग़ज़ लिख दिया जो उनके पास सुरक्षित था। मक़ना वालों ने अपने फलों की चौथाई पैदावार देने की शर्त पर सुलह की। आपने ऐला के शासक को भी एक काग़ज़ लिखकर दिया, जो इस तरह था—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, यह अम्न का परवाना है अल्लाह की ओर से और नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से यहन्ना बिन रूबा और ऐलान के निवासियों के लिए, खुश्की और समुद्र में उनकी कश्तियों और क़ाफ़िलों के लिए अल्लाह का ज़िम्मा है और मुहम्मद नबी का ज़िम्मा है और यही ज़िम्मा उन शामी और समुद्री निवासियों के लिए है, जो यहन्ना के साथ हो रहे, अगर उनका कोई आदमी कोई गड़बड़ करेगा, तो उसका माल उसकी जान के आगे रोक न बन सकेगा और जो आदमी उसका माल ले लेगा, उसके लिए वह हलाल होगा। उन्हें किसी चश्मे पर उतरने और ख़ुश्की या समुद्र के किसी रास्ते पर चलने से मना नहीं किया जा सकता।'

इसके अलावा अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को चार सौ बीस सवारों की टुकड़ी देकर दूमतुल जुन्दल के हाकिम उकैदिर के पास भेजा और फ़रमाया, तुम उसे नील गाय का शिकार करते हुए पाओगे।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० वहां तशरीफ़ ले गए, जब इतनी दूरी पर रह गए कि क़िला साफ़ नज़र आ रहा था तो अचानक एक नील गाय निकली और क़िले के दरवाज़े पर सींग रगड़ने लगी। उकैदिर उसके शिकार को निकला। चांदनी रात थी। हज़रत ख़ालिद और उनके सवारों ने उसे जा लिया और गिरफ़्तार करके अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में ला हाज़िर किया। आपने उसकी जान बख़्शी की और दो हज़ार ऊंट, आठ सौ ग़ुलाम, चार सौ ज़िरहें और चार सौ नेज़ों की शर्त पर मामला किया, उसने जिज़या भी देने का इक़रार किया। चुनांचे उसने आपसे यहन्ना समेत दूमा, तबूक, ऐला और तीमा की शर्तों पर यह मामला तै किया।

इन परिस्थितियों को देखकर वे क़बीले, जो अब तक रूमियों के क़ब्ज़े में थे, समझ गए कि अब अपने उन पुराने सरपरस्तों पर भरोसा करने का वक़्त ख़त्म हो चुका है, इसलिए मुसलमानों के समर्थक बन गए। इस तरह इस्लामी हुकूमत की

सीमाएं फैलकर सीधे-सीधे रूमी सीमा से जा मिलीं और रूम के समर्थकों का बड़ी हद तक अन्त हो गया।

मदीना को वापसी

इस्लामी फ़ौज तबूक से सफल होकर लौटी। कोई टक्कर न हुई। अल्लाह लड़ाई के मामले में ईमान वालों के लिए काफ़ी हुआ। अलबत्ता रास्ते में एक जगह एक घाटी के पास बारह मुनाफ़िक़ों ने नबी सल्ल० को क़त्ल करने की कोशिश की। उस वक़्त आप उस घाटी से गुज़र रहे थे और आपके साथ सिर्फ़ हज़रत अम्मार थे, जो ऊंटनी की नकेल थामे हुए थे और हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान थे जो ऊंटनी हांक रहे थे। बाक़ी सहाबा किराम रज़ि० दूर घाटी की ढलान से गुज़र रहे थे। इसलिए मुनाफ़िक़ों ने इस मौक़े को अपने नापाक मक़सद के लिए ग़नीमत समझा और आपकी ओर क़दम बढ़ाया।

इधर आप और आपके दोनों साथी रास्ता तै कर रहे थे कि पीछे से इन मुनाफ़िक़ों के क़दमों की चापें सुनाई दीं। ये सभी चेहरों पर ढाठा बांधे हुए थे और अब आप पर लगभग चढ़ ही आए थे कि आपने हज़रत हुज़ैफ़ा को उनकी ओर भेजा। उन्होंने उनकी सवारियों के चेहरों पर अपने एक ढाल से चोट लगानी शुरू की, जिससे अल्लाह ने उन्हें आतंकित कर दिया और वे तेज़ी से भागकर लोगों से जा मिले। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके नाम बताए और उनके इरादे की ख़बर दी। इसीलिए हज़रत हुज़ैफ़ा को अल्लाह के रसूल सल्ल० का 'राज़दार' कहा जाता है। इस घटना के ताल्लुक़ से अल्लाह का यह इर्शाद आया कि 'उन्होंने उस काम का इरादा किया, जिसे वे पा न सके।'

सफ़र ख़त्म होते वक़्त जब दूर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना के चिह्न दिखाई पड़े, तो आपने फ़रमाया, यह रहा ताबा और यह रहा उहुद। यह वह पहाड़ है जो हमसे मुहब्बत करता है और जिससे हम मुहब्बत करते हैं।

इधर मदीने में आपके आने क्री ख़बर पहुंची, तो औरतें, बच्चे, बच्चियां बाहर निकल पड़ीं और ज़ोरदार अभिवादन करते हुए, फ़ौज का स्वागत किया और यह गीत पढ़ा[1]—

'हम पर सनीयतुल विदा से चौदहवीं का चांद उदय हुआ, जब तक पुकारने वाला अल्लाह को पुकारे, हम पर शुक्र वाजिब है।'

---

1. यह इब्ने क़य्यिम फ़रमाते हैं और इस पर वार्ता हो चुकी है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० तबूक से रजब के महीने में मदीना वापस पहुंचे।[1] इस सफ़र में पूरे पचास दिन लगे, बीस दिन तबूक में और तीस दिन आने-जाने में। यह आपकी मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी ग़ज़वा था, जिसमें आप ख़ुद शरीक रहे।

पीछे रह जाने वाले

यह ग़ज़वा अपनी विशेष स्थिति की दृष्टि से अल्लाह की ओर से एक कठिन परीक्षा भी थी, जिससे ईमान वालों और ग़ैर-ईमान वालों में अन्तर मालूम हो गया और इस क़िस्म के मौक़े पर अल्लाह का नियम भी यही है—

'अल्लाह ईमान वालो को इसी हालत पर छोड़ नहीं सकता, जिस पर तुम लोग हो, यहां तक कि नापाक को पाक से अलग कर दे।' (3 : 179)

चुनांचे इस ग़ज़वे में सारे के सारे सच्चे ईमान वालों ने शिर्कत की और इससे ग़ैर हाज़िरी निफ़ाक़ (कपटाचार) की निशानी मानी गई। चुनांचे स्थिति यह थी कि अगर कोई पीछे रह गया और उसका उल्लेख अल्लाह के रसूल सल्ल० से किया गया तो आप फ़रमाते कि इसे छोड़ो। अगर इसमें भलाई है तो अल्लाह उसे जल्द ही तुम्हारे पास पहुंचा देगा और अगर ऐसा नहीं है, तो फिर अल्लाह ने तुम्हें उससे राहत दे दी है। ग़रज़ इस ग़ज़वे से या तो वे लोग पीछे रहे, जो विवश थे या वे लोग जो मुनाफ़िक़ थे, जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से ईमान का झूठा दावा किया था और अब झूठा उज्र पेश करके ग़ज़वे में शरीक न होने की इजाज़त ले ली थी और पीछे बैठ रहे थे या सिरे से इजाज़त लिए बग़ैर बैठे रह गए थे। हां, तीन आदमी ऐसे थे जो सच्चे और पक्के मोमिन थे

---

1. यही सही है। पिछले एडीशनों में इब्ने इस्हाक़ पर भरोसा करते हुए जो लिखा गया था कि इस लड़ाई से आपकी वापसी रमज़ान के महीने में हुई, वह सही नहीं, क्योंकि इसका अर्थ यह होगा कि आप मदीना से तबूक के लिए रजब महीने की दूसरी जुमेरात को रवाना हुए थे और यह जुमेरात अक्तूबर की 25 तारीख़ को पड़ती है औ ये दिन अच्छे मौसम वाले बल्कि ठंडक से ज़्यादा क़रीब होते हैं, सुबह व शाम हलकी ठंडक महसूस होती है और खजूर की तोड़ाई पर भी ख़ासा वक़्त गुज़र चुका होता है, हालांकि तमाम रिवायतें इस पंर सहमत हैं कि आप तबूक के लिए सख़्त गर्मी के ज़माने में उस वक़्त निकले थे, जबकि फल, पेड़ों पर पक कर तैयार खड़े थे, इसलिए सहीह यही है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रजब के महीने में मदीना वापस तशरीफ़ ला चुके हैं और तबूक के लिए रवानगी इससे पचास दिन पहले यानी माह जुमादल ऊला में हुई थी।

और किसी औचित्य के बिना पीछे रह गए थे। उन्हें अल्लाह ने आज़माइश में डाला और फिर उनकी तौबा क़ुबूल की।

इसका विवरण यह है कि वापसी पर अल्लाह के रसूल सल्ल० मदीना में दाख़िल हुए तो चलन के मुताबिक़ सबसे पहले मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गए। वहां दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर लोगों के लिए बैठ गए।

इधर मुनाफ़िक़ों ने जिनकी तायदाद अस्सी से कुछ ज़्यादा थी[1], आ-आकर अपनी विवशताएं रखनी शुरू कीं और क़समें खाने लगे। आपने उनका ज़ाहिर क़ुबूल करते हुए बैअत कर ली और मग़्फ़िरत की दुआ की और उनका बातिन अल्लाह के हवाले कर दिया।

बाक़ी रहे तीनों सच्चे ईमान वाले, यानी हज़रत काब बिन मालिक रज़ि०, मुरारा बिन रुबैअ रज़ि० और हिलाल बिन उमैया रज़ि०, तो उन्होंने सच्चाई अख़्तियार करते हुए इक़रार किया कि हमने किसी मजबूरी के बग़ैर ग़ज़्वे में शिर्कत नहीं की थी।

इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० को हुक्म दिया वि इन तीनों से बातचीत न करें। चुनांचे उनके ख़िलाफ़ ज़बरदस्त बाईकाट शुरू हो गया, लोग बदल गए, ज़मीन भयानक बन गई और फैलाव के बावजूद तंग हो गई और ख़ुद उनकी अपनी जान पर बन आई। सख़्ती यहां तक बढ़ी कि चालीस दिन बीतने के बाद हुक्म दिया गया कि अपनी औरतों से भी अलग रहें। जब बाईकाट पर पचास दिन पूरे हो गए, तो अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल किए जाने की ख़ुशख़बरी सुनाई। कहा गया—

'और अल्लाह ने उन तीन व्यक्तियों की भी तौबा क़ुबूल की, जिनका मामला पीछे कर दिया गया था, यहां तक कि जब ज़मीन अपने फैलाव के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी जान भी उन पर तंग हो गई और उन्होंने यक़ीन कर लिया कि अल्लाह से (भागकर) कोई पनाहगांह नहीं है, पर उसी की ओर, फिर अल्लाह उन पर रुजू हुआ ताकि वे तौबा करें, यक़ीनन अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, दया करने वाला है।' (9 : 118)

इस फ़ैसले के आने पर आमतौर पर मुसलमान और ये तीनों सहाबा किराम

---

1. वाक़दी ने लिखा है कि यह तायदाद अंसार मुनाफ़िक़ों की थी। इनके अलावा बनी ग़िफ़ार वग़ैरह अरबों में से बहाना बनाने वालों की तायदाद भी 85 थी, फिर अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके अनुपालकों की तायदाद इनके अलावा थी और इनकी भी अच्छी बड़ी ताय़दाद थी। (देखिए फ़त्हुल बारी 8/119)

ख़ास तौर पर बेइंतिहा ख़ुश हुए। लोगों ने दौड़-दौड़कर मुबारकबाद दी, ख़ुशी से चेहरे खिल उठे और इनाम और सदक़े दिए। वास्तव में यह उनकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा शुभ दिन था।

इसी तरह जो लोग विवशता की वजह से ग़ज़वा में शरीक न हो सके, उनके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया—

'कमज़ोरों पर और रोगियों पर और जो लोग ख़र्च करने के लिए कुछ न पाएं, उन पर कोई हरज नहीं, जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल का भला चाहने वाले हों।' (9 : 91, 92)

इनके बारे में नबी सल्ल० ने भी मदीना के क़रीब पहुंचकर फ़रमाया था, मदीना में कुछ लोग ऐसे हैं कि तुमने जिस जगह भी सफ़र किया और जो घाटी भी तै की, वे तुम्हारे साथ रहे, उन्हें विवशता ने रोक रखा था। लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे मदीना में रहते हुए भी (हमारे साथ थे)?

आपने फ़रमाया, (हां) मदीना में रहते हुए भी।

इस ग़ज़वे का प्रभाव

यह ग़ज़वा अरब प्रायद्वीप पर मुसलमानों का असर फैलाने और उसे ताक़त पहुंचाने में बड़ा असरदार साबित हुआ। लोगों पर यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो गई कि अब अरब प्रायद्वीप में इस्लाम की ताक़त के सिवा और कोई ताक़त ज़िंदा नहीं रह सकती, इसलिए जाहिलों और मुनाफ़िक़ों की वे बची-खुची आरज़ूएं और आशाएं भी ख़त्म हो गईं जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ उन पर आफ़त आने के इन्तिज़ार में उनके दिल में छिपी हुई थी, क्योंकि उनकी सारी आशाओं और आरज़ूओं का केन्द्र रूमी ताक़त था और इस ग़ज़वे में उसका भी भ्रम खुल गया, इसलिए इन लोगों के हौसले टूट गए और उन्होंने वास्तविकता के सामने हथियार डाल दिए कि अब इससे भागने और छुटकारा पाने का कोई रास्ता ही नहीं रह गया था।

और ऐसी स्थिति होने के कारण ही अब इसकी भी ज़रूरत नहीं रह गई थी कि मुसलमान मुनाफ़िक़ों के साथ नम्रता का व्यवहार करें। इसलिए अल्लाह ने उनके ख़िलाफ़ कड़ाई अपनाने का आदेश दिया, यहां उनके सदक़े क़ुबूल करने, उनकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ने, उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करने और उनकी क़ब्रों पर खड़े होने से रोक दिया गया, और उन्होंने मस्जिद के नाम पर षड्यंत्रों का जाल बिछाने का जो घोंसला तैयार किया था, उसे ढा देने का हुक्म दिया गया

और उनके बारे में ऐसी-ऐसी आयतें उतरीं कि वे बिल्कुल नंगे हो गए, उन्हें पहचानने में कोई शक न रहा, मानो मदीना वालों के लिए इन आयतों ने उन मुनाफ़िक़ों पर उंगलियां रख दीं।

इस ग़ज़वे के प्रभावों का अन्दाज़ा इससे भी किया जा सकता है कि मक्का-विजय के बाद (बल्कि इससे पहले भी) अरब के प्रतिनिधिमंडल यद्यपि अल्लाह के रसूल सल्ल० की सेवा में आना शुरू हो गए थे, लेकिन उनकी भरमार इस ग़ज़वे के बाद ही हुई।[1]

इस ग़ज़वे से मुताल्लिक़ क़ुरआन की आयतें

इस ग़ज़वे से मुताल्लिक़ सूरः तौबा की बहुत-सी आयतें उतरीं, कुछ रवाना होने से पहले, कुछ रवाना होने के बाद, कुछ रवाना होने के बाद सफ़र के दौरान, और कुछ मदीना वापस आने के बाद। इन आयतों में ग़ज़वे के हालात का उल्लेख किया गया है। मुनाफ़िक़ का परदा खोला गया है, मुख़्लिस मुजाहिदों की बड़ाई बयान की गई है और सच्चे ईमान वाले, जो ग़ज़वे में गए थे और जो नहीं गए थे, उनकी तौबा के क़ुबूल होने का ज़िक्र है वग़ैरह-वग़ैरह।

इस सन् की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं

इस सन् (09 हि०) में ऐतिहासिक महत्व की कई घटनएं हुईं—

1. तबूक से अल्लाह के रसूल सल्ल० की वापसी के बाद उवैमर अजलानी और उनकी बीवी के बीच लिआन हुआ।

2. ग़ामदिया औरत को जिसने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर बदकारी का इक़रार किया था, रजम (पत्थर से मार-मारकर हलाक) किया गया। इस औरत ने बच्चे की पैदाइश के बाद जब दूध छुड़ा लिया, तब उसे रजम किया गया था।

3. असहमा नजाशी शाह हब्शा ने वफ़ात पाई और अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी ग़ाइबाना नमाज़ पढ़ी।

4. नबी सल्ल० की सुपुत्री उम्मे कुलसूम की वफ़ात हुई। उनकी वफ़ात पर आपको बहुत दुख हुआ और आपने हज़रत उस्मान रज़ि० से फ़रमाया कि अगर मेरे पास तीसरी लड़की होती तो उसकी शादी भी तुमसे कर देता।

---

1. इस ग़ज़वे का विवरण नीचे के स्रोतों से लिया गया है, इब्ने हिशाम 2/515-537, ज़ादुल मआद 3/2-13, सहीह बुख़ारी 2/633-637, 1/252-414 वग़ैरह। सहीह मुस्लिम मय शरह नववी 2/246, फ़त्हुल बारी 8/110-126,

5. तबूक से अल्लाह के रसूल सल्ल० की वापसी के बाद मुनाफ़िक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने वफ़ात पाई। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ की और हज़रत उमर रज़ि० के रोकने के बावजूद उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी। बाद में क़ुरआन उतरा और उसमें हज़रत उमर रज़ि० का समर्थन करते हुए मुनाफ़िक़ों पर जनाज़े की नमाज़ पढ़ने से मना कर दिया गया।

हज (सन् 09 हि०)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के नेतृत्व में

इसी साल ज़ीक़ादा या ज़िलहिज्जा (सन् 09 हि०) में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज के मनासिक क़ायम करने के उद्देश्य से अबूबक्र रज़ि० को अमीरे हज बनाकर रवाना फ़रमाया।

उसके बाद सूरः तौबः का शुरू का हिस्सा उतरा, जिसमें मुश्रिकों से किए गए अह्द व पैमान को बराबरी की बुनियाद पर ख़त्म करने का हुक्म दिया गया था। इस हुक्म के आने के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को रवाना फ़रमाया, ताकि वह आपकी ओर से इसका एलान कर दें। ऐसा इसलिए करना पड़ा कि ख़ून और माल के अह्द व पैमान के सिलसिले में अरब का यही चलन था (कि आदमी या तो ख़ुद एलान करे या अपने परिवार के किसी व्यक्ति से एलान कराए, ख़ानदान से बाहर के किसी आदमी का किया हुआ एलान माना नहीं जाता था।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० से हज़रत अली रज़ि० की मुलाक़ात अर्ज या ज़जनान घाटी में हुई। हज़रत अबूबक्र ने मालूम किया कि अमीर (सरदार) हो या मामूर (अनुपालक)?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, नहीं, बल्कि मामूर हूं।

फिर दोनों आगे बढ़े। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने लोगों को हज कराया। जब (दसवीं तारीख़) यानी क़ुर्बानी का दिन आया, तो हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने जमरा के पास खड़े होकर लोगों में वह एलान किया, जिसका हुक्म अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दिया था। यानी तमाम अह्द वालों का अह्द ख़त्म कर दिया और उन्हें चार महीने की मोहलत दी।

इसी तरह जिनके साथ अह्द व पैमान न था, उन्हें भी चार महीने की मोहलत दी। अलबत्ता जिन मुश्रिकों ने मुसलमानों से अह्द निभाने में कोई कोताही न की थी और न मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी की मदद की थी, उनका अह्द उनकी तैशुदा मुद्दत तक बाक़ी रहा।

और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने सहाबा किराम की एक जमाअत भेजकर यह

आम एलान कराया कि आगे से कोई मुश्रिक हज नहीं कर सकता और न कोई नंगा आदमी बैतुल्लाह का तवाफ़ कर सकता है।

यह एलान मानो अरब प्रायद्वीप से बुतपरस्ती के अन्त का एलान था यानी इस साल के बाद बुतपरस्ती के लिए आने-जाने की गुंजाइश नहीं।[1]

---

1. इस हज के विवरण के लिए देखिए, सहीह बुख़ारी 1/220, 451, 2/626, 671, ज़ादुल मआद 3/25, 36, इब्ने हिशाम 2/543, 546 और तफ़्सीर की किताबें शुरू की सूरः तौबा

ग़ज़वों पर एक नज़र

नबी सल्ल० के ग़ज़वों, सराया और फ़ौजी मुहिमों पर एक नज़र डालने के बाद कोई भी व्यक्ति जो लड़ाई के माहौल, पृष्ठभूमि, और नतीजों का ज्ञान रखता हो, यह स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता कि नबी सल्ल० दुनिया के सबसे बड़े और कमाल वाले फ़ौजी कमांडर थे। आपकी सूझ-बूझ सबसे ज़्यादा दुरुस्त और आपकी समझ सबसे ज़्यादा गहरी थी।

आप जिस तरह नुबूवत व रिसालत के गुणों की दृष्टि से रसूलों के सरदार और नबियों में बड़े थे, उसी तरह फ़ौजी नेतृत्व के गुणों में भी आप अद्वितीय और अपूर्व थे। चुनांचे आपने जो भी लड़ाई लड़ी, उसके लिए ऐसी परिस्थितियों को चुना, जो सूझ-बूझ, विवेक और वीरता के ठीक अनुसार थीं।

किसी लड़ाई में विवेक, फ़ौज की तर्तीब और भावुक केन्द्रों पर उसकी तैनाती, लड़ाई के सबसे ज़्यादा उचित जगह के चुनाव और जंगी प्लानिंग वग़ैरह में आपसे कभी कोई चूक नहीं हुई और इसीलिए इस बुनियाद पर आपको कोई परेशानी नहीं उठानी पड़ी, बल्कि तमाम जंगी मामलों और मसलों के सिलसिले में आपने अपने अमली क़दमों से साबित कर दिया कि दुनिया, अपने बड़े-बड़े कमांडरों के ताल्लुक़ से जिस तरह के नेतृत्व का ज्ञान रखती है, आप इससे बहुत कुछ भिन्न एक निराली ही क़िस्म की कमांडराना क्षमता के मालिक थे, जिसके साथ हार का कोई सवाल ही न था।

इस मौक़े पर यह अर्ज़ कर देना भी ज़रूरी है कि उहुद और हुनैन में जो कुछ पेश आया, उसकी वजह अल्लाह के रसूल सल्ल० की स्ट्रेटजी की कोई ख़राबी न थी, बल्कि उसके पीछे हुनैन में फ़ौज के कुछ व्यक्तियों की कुछ कमज़ोरियां थीं और उहुद में आपकी बड़ी महत्वपूर्ण रणनीति और अनिवार्य हिदायतों को बड़े ही निर्णायक क्षणों में नज़रंदाज़ कर दिया गया था।

फिर इन दोनों लड़ाइयों में जब मुसलमानें के परेशान होने की नौबत आई तो आपने जिस बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया, वह भी अपूर्व था। आप दुश्मन के मुक़ाबले में डटे रहे और अपनी अनुपम रणनीति से उसे या तो उसके मक़्सद में नाकाम बना दिया, जैसा कि उहुद में हुआ, या लड़ाई का पांसा इस तरह पलट दिया कि मुसलमानों की हार जीत में बदल गई, जैसा कि हुनैन में हुआ। हालांकि उहुद जैसी ख़तरनाक स्थिति और हुनैन जैसी बेलगाम भगदड़ कमांडरों की निर्णय-शक्ति छीन लेती है और उनकी मांसपेशियों पर इतना बुरा असर डालती

है कि उन्हें अपने बचाव के अलावा और कोई चिन्ता नहीं रहती।

यह बात तो उन लड़ाइयों के ख़ालिस फ़ौजी और जंगी पहलू से थी। बाक़ी रहे दूसरे पहलू, तो वे भी बड़े महत्वपूर्ण हैं।

आपने इन ग़ज़वों के ज़रिए अम्न व अमान क़ायम किया, फ़ित्ने की आग बुझाई, इस्लाम और बुतपरस्ती के संघर्ष में शत्रु का दबदबा और उसकी शान तोड़कर रख दिया और उन्हें इस्लामी दावत व तब्लीग़ की राह आज़ाद छोड़ने और समझौता करने पर मजबूर किया। इस तरह आपने इन लड़ाइयों की वजह से यह भी मालूम कर लिया कि आपका साथ देनेवालों में कौन से लोग निष्ठावान हैं और कौन से लोग मुनाफ़िक़ (कपटाचारी), जो मन के भीतर धोखादेही, और बेईमानी की भावनाएं छिपाए हुए हैं?

फिर आपने मोर्चाबन्दी के व्यावहारिक आदर्शों के ज़रिए मुसलमान कमांडरों की एक ज़बरदस्त जमाअत भी तैयार कर दी, जिन्होंने आपके बाद इराक़ और शाम के मैदानों में फ़ारस और रूम से टक्कर ली और जंगी प्लानिंग और तकनीक में उनके बड़े-बड़े कमांडरों को मात देकर उन्हें उनके मकान और भूभाग में, मालों और बाग़ों से, चश्मों और खेतों से, आरामदेह और इज़्ज़तदार जगहों से और मज़ेदार नेमतों से निकाल बाहर किया।

इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन ग़ज़वों की वजह से मुसलमानों के लिए रिहाइश, खेती, पेशे और काम का इन्तिज़ाम फ़रमाया। बेघर और मुहताज पनाह लेनेवालों के मसले हल फ़रमाए। हथियार, घोड़े, साज़ व सामान और लड़ाई के ख़र्च जुटाए और वह सब कुछ अल्लाह के बन्दों पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म व ज़्यादती और जौर व जफ़ा के बिना हासिल किया।

आपने इन कारणों और उद्देश्यों को भी तब्दील कर डाला, जिनके लिए ज़ाहिलियत के दौर में लड़ाई के शोले भड़का करते थे, यानी जाहिलियत के ज़माने में लड़ाई नाम थी लूट-मार, क़त्ल और ग़ारतगरी का, ज़ुल्म व ज़्यादती और बदला लेने और हिंसा करने का, कमज़ोरों को कुचलने, आबादियां वीरान करने और इमारतें ढाने का, औरतों की बेइज़्ज़ती करने और बूढ़ों-बच्चों और बच्चियों के साथ पत्थर दिल से पेश आने का, खेती-बाड़ी और जानवरों को हलाक करने और ज़मीन में तबाही और फ़साद मचाने का, मगर इस्लाम ने इस लड़ाई की रूह को बदलकर उसे एक पवित्र जिहाद में बदल दिया, जिसे बहुत मुनासिब और उचित कारणों के तहत शुरू किया जाता है और उसके ज़रिए ऐसे मानवतापूर्ण उद्देश्य और ऊंचे मक़्सदों को हासिल किया जाता है, जिन्हें हर ज़माने

और हर देश में इंसानी समाज के गौरव का कारण समझा गया है, क्योंकि जब लड़ाई का अर्थ यह हो गया कि इंसान को क़हर व ज़ुल्म के निज़ाम से निकालकर न्याय-व्यवस्था में लाने की सशस्त्र जद्दोजेहद की जाए। यानी एक ऐसी व्यवस्था को जिसमें ताक़तवर कमज़ोर को खा रहा हो, उलट कर एक ऐसी व्यवस्था स्थापित किया जाए जिसमें ताक़तवर कमज़ोर हो जाए, जब तक कि उससे कमज़ोर का हक़ ले न लिया जाए।

इस तरह अब लड़ाई का मतलब यह हो गया कि इन कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों को निजात दिलाई जाए जो दुआएं करते रहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! हमें इस बस्ती से निकाल जिसके निवासी ज़ालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से वली बना और अपने पास से मददगार बना, साथ ही इस लड़ाई का अर्थ यह हो गया कि अल्लाह की ज़मीन को धोखादेही, ख़ियानत, ज़ुल्म व सितम और बदी और गुनाह से पाक करके उसकी जगह अम्न व अमान, दया, रहमत, एक दूसरे के हक़्क़ों को देना और मुरव्वत और मानवता की व्यवस्था पैदा करना हो जाए।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने लड़ाई के लिए मानवता भरे विधान भी तैयार किए और अपने फ़ौजियों और कमांडरों पर उनकी पाबन्दी ज़रूरी बताते हुए किसी हाल में उनसे बाहर जाने की इजाज़त न दी।

हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जब किसी व्यक्ति को किसी फ़ौज या सरीया का अमीर मुक़र्रर फ़रमाते तो उसे ख़ास उसके अपने नफ़्स के बारे में अल्लाह के तक़्वा की और उसके मुसलमान साथियों के बारे में भलाई की वसीयत फ़रमाते, फिर फ़रमाते, अल्लाह के नाम से अल्लाह की राह में ग़ज़वे करो। जिसने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया, उनसे लड़ाई करो, ग़ज़्वा करो, ख़ियानत न करो, बद-अह्दी न करो, नाक-कान वग़ैरह न काटो, किसी बच्चे को क़त्ल न करो।

इसी तरह आप आसानी बरतने का हुक्म देते और फ़रमाते, 'आसानी करो, सख़्ती न करो, लोगों को सुकून दिलाओ, बिदकाओ नहीं।[1]

और जब रात में किसी क़ौम के पास पहुंचते तो सुबह होने से पहले छापा न मारते, साथ ही आपने किसी को आग में जलाने से बड़ी कड़ाई के साथ मना किया। इसी तरह बांधकर क़त्ल करने और औरतों को मारने और उन्हें क़त्ल करने से भी मना किया और लूट-पाट से रोका, यहां तक कि आपने फ़रमाया कि

1. सहीह मुस्लिम 2/82, 83, अल मोजम अस्सग़ीर : तबरानी 1/123, 187

लूट का माल मुरदार से ज़्यादा हलाल नहीं।

इसी तरह आपने खेती-बाड़ी तबाह करने, जानवर हलाक करने और पेड़ काटने से मना फ़रमाया, सिवा इस शक्ल के कि उसकी सख़्त ज़रूरत आ पड़े और पेड़ काटे बिना कोई रास्ता न हो।

मक्का विजय के मौक़े पर आपने यह भी फ़रमाया, किसी घायल पर हमला न करो, किसी भागने वाले का पीछा न करो और किसी क़ैदी को क़त्ल न करो। आपने यह चलन भी चलाया कि दूत की हत्या न की जाए। साथ ही आपने ग़ैर-मुस्लिम नागरिकों के क़त्ल से भी बड़ी कड़ाई से रोका, यहां तक कि फ़रमाया कि जो व्यक्ति किसी ग़ैर-मुस्लिम को क़त्ल करेगा, वह जन्नत की ख़ुशबू नहीं पाएगा, हालांकि उसकी ख़ुशबू चालीस साल की दूरी से पाई जाती है।

ये और इस तरह के दूसरे ऊंचे दर्जे के नियम व विधान थे जिनके कारण लड़ाई का काम जाहिलियत की गन्दगियों से पाक व साफ़ होकर पवित्र जिहाद में बदल गया।[1]

---

1. इसके विवरण के लिए देखिए ज़ादुल मआद 2/62, 68

अल्लाह के दीन में जत्थ के जत्थ दाख़िल

जैसा कि हमने अर्ज़ किया कि मक्का विजय की लड़ाई एक निर्णायक लड़ाई थी, जिसने बुतपरस्ती का काम तमाम कर दिया और सारे अरब के लिए सत्य-असत्य की पहचान बन गया। इसकी वजह से उनके सन्देह जाते रहे। इसीलिए इसके बाद उन्होंने बड़ी तेज़ी से इस्लाम क़ुबूल किया।

हज़रत अम्र बिन सलमा का बयान है कि हम लोग एक चश्मे पर (आबाद) थे, जो लोगों की गुज़रगाह था। हमारे यहां से क़ाफ़िले गुज़रते रहते थे और हम उनसे पूछते रहते थे कि लोगों का क्या हाल है? उस आदमी यानी नबी सल्ल० का क्या हाल है? और कैसा है?

लोग कहते, वह समझता है कि अल्लाह ने उसे पैग़म्बर बनाया है, उसके पास वह्य भेजी है। अल्लाह ने यह और यह वह्य की है। मैं यह बात याद कर लेता था, मानो वह मेरे सीने में चिपक जाती थी और अरब इस्लाम अपनाने के लिए मक्का-विजय का इन्तिज़ार कर रहे थे, कहते थे, इसे और इसकी क़ौम को (आपस में लड़ने के लिए) छोड़ दो। अगर वह आदमी क़ौम पर ग़ालिब आ गया तो सच्चा नबी है।

चुनांचे जब मक्का विजय की घटना घटी तो हर क़ौम अपने इस्लाम के साथ (मदीना की ओर) बढ़ी और मेरे बाप भी मेरी क़ौम के इस्लाम के साथ तशरीफ़ ले गए और जब (नबी सल्ल० की ख़िदमत से) वापस आए तो फ़रमाया, मैं तुम्हारे पास ख़ुदा की क़सम! एक सच्चे नबी के पास से आ रहा हूं। आपने फ़रमाया है कि फ़्लां नमाज़ फ़्लां वक़्त पढ़ो और फ़्लां नमाज़ फ़्लां वक़्त पढ़ो और जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो तुममें से एक आदमी अज़ान कहे और जिसे क़ुरआन ज़्यादा याद हो, वह इमामत करे।

इसी हदीस से अन्दाज़ा होता है कि मक्का विजय की घटना हालात को तब्दील करने में, इस्लाम को ताक़त पहुंचाने में, अरब वालों का दृष्टिकोण तै कराने में और इस्लाम के सामने उन्हे घुटने टेकने में कितने गहरे और दूर-दूर तक के प्रभाव रखती थी। यह स्थिति ग़ज़वा तबूक के बाद पक्की से पक्की हो गई।

इसीलिए हम देखते हैं कि इन दो वर्षों (सन् 09 और सन् 10 हि०) में जत्थ के जत्थ दाखिल हो रहे थे, यहां तक कि वह इस्लामी फ़ौज जो मक्का विजय के मौक़े पर दस हज़ार फ़ौजियों पर सम्मिलित थी, उसकी तायदाद ग़ज़वा तबूक में (जबकि अभी मक्का विजय पर पूरा एक साल भी नहीं गुज़रा था) इतनी बढ़ गई

कि वह तीस हज़ार फ़ौजियों के ठाठें मारते समुद्र में बदल गई। फिर हम आख़िरी हज में देखते हैं कि एक लाख चौबीस हज़ार या एक लाख चौवालीस हज़ार मुसलमान की बाढ़ आ गई है, जो अल्लाह के रसूल सल्ल० के आसपास इस तरह लब्बैक पुकारती, तक्बीर कहती और गुणगान करती है कि दुनिया गूंज उठती है और घाटी, पर्वत सभी तौहीद (एकेश्वरवाद) के गीत से गूंज जाते हैं।

प्रतिनिधिमंडल

ग़ज़वे के माहिरों ने जिन प्रतिनिधिमंडलों का उल्लेख किया है, उनकी तायदाद सत्तर से ज़्यादा है, लेकिन यहां न तो उन सबके वर्णन की गुंजाइश है और न ही विस्तार में जाने से कोई बड़ा फ़ायदा होने वाला है, इसलिए हम सिर्फ़ उन्हीं प्रतिनिधिमंडलों का उल्लेख कर रहे हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व रखते हैं।

पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यद्यपि आम क़बीलों की मंडलियां मक्का विजय के बाद नबी सल्ल० की ख़िदमत में आना शुरू हुई थीं, लेकिन कुछ क़बीले ऐसे भी थे जिनके लोग मक्का विजय से पहले ही मदीना आ चुके थे। यहां हम उनका उल्लेख भी कर रहे हैं—

1. अब्दुल क़ैस प्रतिनिधिमंडल—इस क़बीले का प्रतिनिधिमंडल दोबारा नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ था। पहली बार सन् 05 में या इससे भी पहले और दूसरी बार सन् 09 हि० में।

पहली बार इसके आने की वजह यह हुई कि इस क़बीले का एक व्यक्ति मुंक़िज़ बिन हिब्बान कारोबार का सामान लेकर मदीना आया-जाया करता था। वह जब नबी सल्ल० की हिजरत के बाद पहली बार मदीना आया और उसे इस्लाम का पता चला, तो वह मुसलमान हो गया और नबी सल्ल० का एक पत्र लेकर अपनी क़ौम के पास गया। उन लोगों ने भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया और उनके 13 या 14 आदमियों की एक मंडली हुर्मत वाले महीनों में नबी सल्ल० की सेवा में आयी। इस बार इस मंडली ने ईमान और पेय के बारे में सवाल किया था, इसका प्रमुख अल-अशज्ज अल असरी था, जिसके बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया था कि तुममें दो ऐसे गुण हैं, जिन्हें अल्लाह पसन्द करता है—

एक दूरदर्शिता, दूसरे सहनशीलता।

दूसरी बार इस क़बीले का प्रतिनिधिमंडल, जैसा कि बताया गया, प्रतिनिधिमंडलों के साल (यानी सन् 09 हि० में) आया। उस वक़्त उनकी

तायदाद चालीस थी और उनमें अला बिन जारूद अब्दी था, जो ईसाई था, लेकिन मुसलमान हो गया और उसका इस्लाम बहुत ख़ूब रहा।[1]

2. दौस प्रतिनिधिमंडल—यह मंडल 07 हि० के शुरू में मदीना आया। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ैबर में थे।

आप पीछे पढ़ चुके हैं कि इस क़बीले के प्रमुख हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ि० उस वक़्त इस्लाम ले आये थे, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का में थे। फिर उन्होंने अपनी क़ौम में वापस जाकर इस्लाम की दावत व तब्लीग़ का काम बराबर किया, लेकिन उनकी क़ौम बराबर टालती और विलम्ब करती रही, यहां तक कि हज़रत तुफ़ैल उनकी ओर से निराश हो गए।

फिर उन्होंने नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप क़बीला दौस पर बद-दुआ कर दीजिए, लेकिन आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! दौस को हिदायत दे और आपकी इस दुआ के बाद इस क़बीले के लोग मुसलमान हो गए और हज़रत तुफ़ैल ने अपनी क़ौम के सत्तर या अस्सी घरानों का जत्था लेकर सन् 07 हि० के शुरू में उस वक़्त मदीना हिजरत की, जब नबी सल्ल० ख़ैबर में तशरीफ़ रखते थे। इसके बाद हज़रत तुफ़ैल ने आगे बढ़कर ख़ैबर में आपका साथ पकड़ लिया।

3. फर्वा बिन अम्र जज़ामी का दूत—हज़रत फ़र्वा रूमी फ़ौज के अन्दर एक अरब कमांडर थे। उन्हें रूमियों ने अपनी सीमाओं से मिले हुए अरब इलाक़ों का गवर्नर बना दिया था। उनका केन्द्र मआन (दक्षिणी जार्डन) था और अमलदारी आस-पास के इलाक़ों में थी। उन्होंने मूता की लड़ाई में मुसलमानों की बहादुरी और जंगी महारत (निपुणता) देखकर इस्लाम अपना लिया था। एक और दूत भेजकर अल्लाह के रसूल सल्ल० को अपने मुसलमान होने की ख़बर दी। उपहार के तौर पर एक सफ़ेद ख़च्चर भी भिजवाया।

रूमियों को उनके मुसलमान होने का पता चला तो उन्होंने पहले तो उन्हें गिरफ़्तार करके क़ैद में डाल दिया, फिर अधिकार दिया कि या तो इस्लाम धर्म से फिर जाएं या मौत के लिए तैयार रहें। उन्होंने विधर्मी होने पर मौत को तर्जीह दी। चुनांचे उन्हें फ़लस्तीन में अफ़रा नाम के एक चश्मे पर सूली देकर उनको मौत की नींद सुला दिया गया।[2]

4. सदा प्रतिनिधिमंडल—यह सन् 08 हि० में जिइर्राना से अल्लाह के रसूल

---

1. शरह सहीह मुस्लिम, लेख, इमाम नववी 1/33, फ़त्हुल बारी 8/85, 86
2. ज़ादुल मआद 3/45

तायदाद चालीस थी और उनमें अला बिन जारूद अब्दी था, जो ईसाई था, लेकिन मुसलमान हो गया और उसका इस्लाम बहुत ख़ूब रहा।[1]

2. दौस प्रतिनिधिमंडल—यह मंडल 07 हि० के शुरू में मदीना आया। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ैबर में थे।

आप पीछे पढ़ चुके हैं कि इस क़बीले के प्रमुख हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ि० उस वक़्त इस्लाम ले आये थे, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का में थे। फिर उन्होंने अपनी क़ौम में वापस जाकर इस्लाम की दावत व तब्लीग़ का काम बराबर किया, लेकिन उनकी क़ौम बराबर टालती और विलम्ब करती रही, यहां तक कि हज़रत तुफ़ैल उनकी ओर से निराश हो गए।

फिर उन्होंने नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप क़बीला दौस पर बद-दुआ कर दीजिए, लेकिन आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! दौस को हिदायत दे और आपकी इस दुआ के बाद इस क़बीले के लोग मुसलमान हो गए और हज़रत तुफ़ैल ने अपनी क़ौम के सत्तर या अस्सी घरानों का जत्था लेकर सन् 07 हि० के शुरू में उस वक़्त मदीना हिजरत की, जब नबी सल्ल० ख़ैबर में तशरीफ़ रखते थे। इसके बाद हज़रत तुफ़ैल ने आगे बढ़कर ख़ैबर में आपका साथ पकड़ लिया।

3. फर्वा बिन अम्र जज़ामी का दूत—हज़रत फ़र्वा रूमी फ़ौज के अन्दर एक अरब कमांडर थे। उन्हें रूमियों ने अपनी सीमाओं से मिले हुए अरब इलाक़ों का गवर्नर बना दिया था। उनका केन्द्र मआन (दक्षिणी जार्डन) था और अमलदारी आस-पास के इलाक़ों में थी। उन्होंने मूता की लड़ाई में मुसलमानों की बहादुरी और जंगी महारत (निपुणता) देखकर इस्लाम अपना लिया था। एक और दूत भेजकर अल्लाह के रसूल सल्ल० को अपने मुसलमान होने की ख़बर दी। उपहार के तौर पर एक सफेद ख़च्चर भी भिजवाया।

रूमियों को उनके मुसलमान होने का पता चला तो उन्होंने पहले तो उन्हें गिरफ़्तार करके क़ैद में डाल दिया, फिर अधिकार दिया कि या तो इस्लाम धर्म से फिर जाएं या मौत के लिए तैयार रहें। उन्होंने विधर्मी होने पर मौत को तर्जीह दी। चुनांचे उन्हें फ़लस्तीन में अफ़रा नाम के एक चश्मे पर सूली देकर उनको मौत की नींद सुला दिया गया।[2]

4. सदा प्रतिनिधिमंडल—यह सन् 08 हि० में जिइर्राना से अल्लाह के रसूल

1. शरह सहीह मुस्लिम, लेख, इमाम नववी 1/33, फ़त्हुल बारी 8/85, 86
2. ज़ादुल मआद 3/45

सल्ल० की वापसी के बाद सेवा में हाज़िर हुआ। इसकी वजह यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने चार सौ मुसलमानों की एक मुहिम तैयार करके उसे हुक्म दिया कि यमन का वह भाग रौंद आएं जिसमें क़बीला सदा रहता है।

यह मुहिम अभी क़नात घाटी के सिरे पर पड़ाव डाले हुए थी कि हज़रत ज़ियाद बिन हारिस सदाई को इसका ज्ञान हो गया। वह भागम-भाग अल्लाह के रसूल सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे पीछे जो लोग हैं, मैं उनके नुमाइन्दे की हैसियत में हाज़िर हुआ हूं। इसलिए आप फ़ौज वापस बुला लें और मैं आपके लिए अपनी क़ौम की जमानत लेता हूं। आपने क़नात घाटी ही से फ़ौज वापस बुला ली।

इसके बाद हज़रत ज़ियाद ने अपनी क़ौम में वापस आकर उन्हें उभारा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हों। उनके उभारने पर पन्द्रह आदमी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम कुबूल करने पर बैअत की। फिर अपनी क़ौम में वापस जाकर इस्लाम का प्रचार किया और उनमें इस्लाम फैल गया। विदाई हज के मौक़े पर उनके एक सौ आदमियों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० की सेवा में हाज़िरी दी।

5. काब बिन ज़ुहैर बिन अबी सलमा का आना—यह व्यक्ति एक कवि परिवार का चिराग़ था और ख़ुद भी अरब का बहुत बड़ा कवि था। यह काफ़िर था और नबी सल्ल० की बुराई किया करता था। इमाम हाकिम के कहने के मुताबिक यह भी उन अपराधियों की सूची में शामिल था, जिनके बारे में मक्का विजय के मौक़े पर हुक्म दिया गया था कि अगर वे ख़ाना काबा का परदा पकड़े हुए पाए जाएं, तो भी उनकी गरदन मार दी जाए। लेकिन यह व्यक्ति बच निकला।

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ग़ज़वा तायफ़ (सन् 08 हि०) से वापस हुए तो काब के पास उसके भाई बुजैर बिन ज़ुहैर ने लिखा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मक्का के उन कई व्यक्तियों को क़त्ल करा दिया है जो आपकी बुराई करते और आपको कष्ट पहुंचाते थे। क़ुरैश के बचे-खुचे कवियों मे से जिसकी जिधर सींग समाई है निकल भागा है, इसलिए अगर तुम्हें अपनी जान की ज़रूरत है तो अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास उड़कर आओ, क्योंकि कोई भी व्यक्ति तौबा करके आपके पास आ जाए तो आप उसे क़त्ल नहीं करते और अगर यह बात मंज़ूर नहीं हो तो फिर जहां निजात मिल सके, निकल भागो।

इसके बाद दोनों भाइयों में और पत्र-व्यवहार हुआ, जिसके नतीजे में काब बिन ज़ुहैर को ज़मीन तंग महसूस होने लगी और उसे अपनी जान के लाले पड़ते

नज़र आए, इसलिए आख़िरकार वह मदीना आ गया और जुहैना के एक आदमी के यहां मेहमान हुआ, फिर उसी के साथ सुबह की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो जुहैनी ने इशारा किया और वह उठकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास जा बैठा और अपना हाथ आपके हाथ में रख दिया। अल्लाह के रसूल सल्ल० उसे पहचानते न थे। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! काब बिन ज़ुहैर तौबा करके मुसलमान हो गया और आपसे अम्न चाहता है, तो क्या अगर मैं उसे आपकी सेवा में हाज़िर कर दूं? तो आप उसकी इन चीज़ों को क़ुबूल फ़रमा लेंगे?

आपने फ़रमाया, हां।

उसने कहा, मैं ही काब बिन ज़ुहैर हूं। यह सुनकर एक अंसारी सहाबी उस पर झपट पड़े और उसकी गरदन मारने की इजाज़त चाही।

आपने फ़रमाया, छोड़ दो, यह आदमी तौबा करके और पिछली बातों से अलग होकर आया है।

इसके बाद इसी मौक़े पर काब बिन ज़ुहैर ने अपना मशहूर क़सीदा (प्रशस्ति-गीत) आपको पढ़कर सुनाया, जिसकी शुरूआत यों है—

'सुआद दूर हो गई तो मेरा दिल बेक़रार है। इसके पीछे दीवाना और बेड़ियों में जकड़ा हुआ है, उसका फ़िदया (प्रतिदान) नहीं दिया गया।'

इस क़सीदे (प्रशस्ति-पत्र) में काब ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से माज़रत करते हुए और आपकी तारीफ़ करते हुए आगे यों कहा है—

'मुझे बताया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुझे धमकी दी है, हालांकि अल्लाह के रसूल सल्ल० से दरगुज़र की आशा है, आप ठहरें, चुग़लख़ोरों की बात न लें। वह हस्ती आपकी रहनुमाई करे जिसने आपको नसीहतों और अच्छी बातों से भरे क़ुरआन का उपहार दिया है।

यद्यपि मेरे बारे में बातें बहुत कही गई हैं, लेकिन मैंने अपराध नहीं किया है। मैं ऐसी जगह खड़ा हूं और वे बातें देख और सुन रहा हूं कि अगर हाथी भी वहां खड़ा हो और इन बातों को देखे और सुन ले तो थरथरा जाए, सिवाए इस शक्ल के कि उस पर अल्लाह के हुक्म से रसूल की मेहरबानी हो, यहां तक कि मैंने अपना हाथ किसी झगड़े के बिना उस मोहतरम हस्ती के हाथ में रख दिया है, जिसे बदला लेने पर पूरी क़ुदरत हासिल है और उसकी बात बात है, जब मैं उससे बात करता हूं।

जबकि मुझसे कहा गया है कि तुमसे (फ़्लां-फ़्लां बातें) जुड़ी हैं और तुमसे

पूछताछ की जाएगी, तो वह मेरे नज़दीक उस शेर से भी ज़्यादा ख़ौफ़नाक होते हैं जिसका कछार कि घातक घाटी के पेट में स्थित किसी ऐसी कड़ी ज़मीन में हो, जिससे पहले भी विनाश ही हो। यक़ीनन रसूल एक नूर हैं जिनसे रोशनी हासिल की जाती है, अल्लाह की तलवारों में से एक सौंपी हुई हिंदी तलवार हैं।'

इसके बाद काब बिन ज़ुहैर ने क़ुरैश के मुहाजिरों की तारीफ़ की, क्योंकि काब के आने पर उनके किसी आदमी ने भलाई के सिवा कोई बात और हरकत नहीं की थी, लेकिन उनकी तारीफ़ के दौरान अंसार पर तान किया, क्योंकि उनके एक आदमी ने उनकी गरदन मारने की इजाज़त चाही थी, चुनांचे कहा—

'वे (क़ुरैश) ख़ूबसूरत, मटकते ऊंट की चाल चलते हैं और तलवार उनकी हिफ़ाज़त करती है, जबकि नाटे-खोटे, काले-कलूटे लोग रास्ता छोड़कर भागते हैं।'

लेकिन जब वह मुसलमान हो गया और उसका इस्लाम अच्छा हो गया तो उसने एक क़सीदा अंसार की तारीफ़ में कहा और उनकी शान में उससे जो ग़लती हो गई थी, उसे दूर किया, चुनांचे उस क़सीदे में कहा—

'जिसे सज्जनतापूर्ण ज़िंदगी पसन्द हो, वे हमेशा किसी भले अंसार के दस्ते में रहे। उन्होंने ख़ूबियां बाप-दादा से विरासत में पाई हैं। सच तो यह है कि अच्छे लोग वही हैं जे अच्छों की औलाद हों।'

6. उज़रा प्रतिनिधिमंडल—यह नौ सफ़र सन् 09 हि० में मदीना आया, बारह आदमियों पर सम्मिलित था, इसमें हमज़ा बिन नोमान भी थे।

जब प्रतिनिधिमंडल से पूछा गया कि आप कौन लोग हैं?

तो उनके नुमाइन्दे ने कहा, हम बनू उज़रा हैं, क़ुसई के सौतेले भाई। हमने ही क़ुसई की ताईद की थी और ख़ुज़ामा और बनू बक्र को मक्के से निकाला था। (यहां) हमारे रिश्ते और क़राबतदारियां हैं।

इस पर नबी सल्ल० ने अभिवादन किया और शाम देश के जीते जाने की ख़ुशख़बरी दी, साथ ही उन्हें काहिन औरतों से सवाल करने से मना किया और उन जानवरों से रोका, जिन्हें ये लोग (शिर्क की हालत में) ज़िब्ह किया करते थे। इस प्रतिनिधिमंडल ने इस्लाम क़ुबूल किया और कुछ दिन ठहरकर वापस गया।

7. बली प्रतिनिधिमंडल—यह रबीउल अव्वल सन् 09 हि० में मदीना आया और मुसलमान होकर तीन दिन तक ठहरा रहा। ठहरने के समय में प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख अबुन्नसीब ने मालूम किया कि क्या सत्कार में भी सवाब मिलता है?

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, हां, किसी मालदार या फ़क़ीर के साथ

जो भी अच्छा व्यवहार करोगे, वह सदक़ा है।

उसने पूछा, मेहमानी की मुद्दत कितनी है?

आपने फ़रमाया, तीन दिन।

उसने पूछा, किसी लापता व्यक्ति की गुमशुदा भेड़-बकरी मिल जाए तो क्या हुक्म है?

आपने फ़रमाया, वह तुम्हारे लिए है या तुम्हारे भाई के लिए है या फिर भेड़िए के लिए है। उसके बाद उसने गुमशुदा ऊंट के बारे में सवाल किया।

आपने फ़रमाया, तुम्हें इससे क्या वास्ता? इसे छोड़ दो, यहां तक कि उसका मालिक उसे पा जाए।

8. सक़ीफ़ प्रतिनिधिमंडल—यह प्रतिनिधिमंडल रमज़ान सन् 09 हि० में तबूक से अल्लाह के रसूल सल्ल० की वापसी के बाद हाज़िर हुआ। इस क़बीले में इस्लाम फैलने की शक्ल यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़ीक़ादा सन् 08 हि० में जब ग़ज़वा तायफ़ से वापस हुए तो आपके मदीना पहुंचने से पहले ही इस क़बीले के सरदार उर्व: मस्ऊद ने आपकी सेवा में हाज़िर होकर इस्लाम क़ुबूल कर लिया, फिर अपने क़बीला में वापस जाकर लोगों को इस्लाम की दावत दी। वह चूंकि अपनी क़ौम का सरदार था और सिर्फ़ यही नहीं कि उसकी बात मानी जाती थी, बल्कि उसे उस क़बीले के लोग अपनी लड़कियों और औरतों से भी ज़्यादा प्रिय रखते थे।

इसलिए उसका विचार था कि लोग उसकी बात मानेंगे, लेकिन जब उसने इस्लाम की दावत दी तो उसकी उम्मीद के बिल्कुल ख़िलाफ़ लोगों ने उस पर हर ओर से तीरों की बौछार कर दी और उसे जान से मार डाला।

फिर उसे क़त्ल करने के बाद कुछ महीने तो यों ही ठरहे रहे, लेकिन इसके बाद उन्हें एहसास हुआ कि आस-पास का इलाक़ा जो मुसलमान हो चुका है, उससे हम मुक़ाबले की ताब नहीं रखते, इसलिए उन्होंने आपस में मश्विरा करके तै किया कि एक आदमी को अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में भेजें और उसके लिए अब्द या लैल बिन अम्र से बातचीत की, पर वह तैयार न हुआ।

उसे डर हुआ कि कहीं उसके साथ भी वही व्यवहार न किया जाए जो उर्व: बिन मस्ऊद के साथ किया जा चुका है, इसलिए उसने कहा, मैं यह काम उस वक़्त तक नहीं कर सकता, जब तक मेरे साथ और कुछ लोगों को न भेजो। लोगों ने उसकी यह मांग मान ली और उसके साथ मित्रों में से दो आदमी और बनी मालिक में से तीन आदमी लगा दिए। इस तरह कुल छः आदमियों का

प्रतिनिधिमंडल तैयार हो गया। इसी प्रतिनिधिमंडल में हज़रत उस्मान बिन अबी आस सक़फ़ी भी थे, जो सबसे ज़यादा कम उम्र थे।

जब ये लोग नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो आपने उनके लिए मस्जिद के एक कोने में एक कुब्बा लगवा दिया, ताकि यह क़ुरआन सुन सकें और सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ते हुए देख सकें। फिर ये लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आते-जाते रहे और आप उन्हें इस्लाम की दावत देते रहे।

आख़िर उनके सरदार ने सवाल किया कि आप अपने और सक़ीफ़ के बीच एक समझौता नामा लिख दें, जिसमें ज़िनाकारी, शराबनोशी और सूदख़ोरी की इजाज़त हो। उनके बावजूद 'लात' को बाक़ी रहने दिया जाए, उन्हें नमाज़ से माफ़ रखा जाए, और उनके बुत ख़ुद उनके हाथों से न तुड़वाएं, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनमें से कोई भी बात मंज़ूर न की, इसलिए उन्होंने तंहाई में मश्विरा किया मगर उन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने हथियार डालने के सिवा कोई उपाय नंजर न आया।

आख़िर उन्होंने यही किया और अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्ल० के हवाले करते हुए इस्लाम क़ुबूल कर लिया। अलबत्ता यह शर्त लगाई कि 'लात' को ढाने का इन्तिज़ाम अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ुद फ़रमा दें, सक़ीफ़ इसे अपने हाथों हरगिज़ न ढाएंगे। आपने यह शर्त मंज़ूर कर ली और एक काग़ज़ लिख दिया और उस्मान बिन अबी आस सक़फ़ी को उनका अमीर बना दिया। क्योंकि वही इस्लाम को समझने और दीन और क़ुरआन की शिक्षा प्राप्त करने में सबसे ज़्यादा आगे थे और इसके लोभी भी थे।

इसकी वजह यह थी कि प्रतिनिधिमंडल के सदस्य हर दिन सुबह नबी सल्ल० की सेवा में आते, लेकिन उस्मान बिन अबी आस को अपने डेरे पर छोड़ देते थे। इसलिए जब प्रतिनिधिमंडल वापस आकर दोपहर में आराम करता तो हज़रत उस्मान बिन अबी आस अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर क़ुरआन पढ़ते और दीन की बातें मालूम करते और जब आपको आराम करता हुआ पाते, तो इसी मक़सद के लिए हज़रत अबूबक्र की ख़िदमत में चले जाते।

(हज़रत उस्मान बिन अबी आस की गवर्नरी बड़ी बरकती साबित हुई। अल्लाह के रसूल सल्ल० की वफ़ात के बाद जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त में इर्तिदाद (इस्लाम से विमुखता) की लहर चली और सक़ीफ़ ने भी ऐसा करना चाहा तो उन्हें हज़रत उस्मान बिन अबी आस ने सम्बोधित करके कहा, सक़ीफ़ के लोगो ! तुम सबसे आख़िर में इस्लाम लाए हो, इसलिए सबसे पहले

इस्लाम के विधर्मी न बनो। यह सुनकर लोग ऐसा करने से रुक गए और इस्लाम पर जमे रहे।)

बहरहाल प्रतिनिधिमंडल ने अपनी क़ौम में वापस आकर वास्तविकता छिपाए रखा और क़ौम के सामने लड़ाई और मार-धाड़ का हव्वा खड़ा किया और दुख और ग़म ज़ाहिर करते हुए बताया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे मांग की है कि इस्लाम अपना लें और ज़िना, शराब और सूद छोड़ दें, वरना कड़ी लड़ाई की जाएगी।

यह सुनकर पहले तो अज्ञानता-अहंकार छा गया और वे दो-तीन दिन तक लड़ाई ही की बात सोचते रहे, लेकिन फिर अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया, और उन्होंने प्रतिनिधिमंडल से निवेदन किया कि वह फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास वापस जाए और आपकी मांगें मान ले। इस मरहले पर पहुंचकर प्रतिनिधिमंडल ने असल बात बताई और जिन बातों पर समझौता हो चुका था, उन्हें ज़ाहिर किया। सक़ीफ़ ने उसी वक़्त इस्लाम अपना लिया।

उधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने लात को ढाने के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के नेतृत्व में कुछ सहाबा की एक छोटी सी तायदाद भेजी। हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा ने खड़े होकर गुर्ज़ उठाया और अपने साथियों से कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं तनिक आप लोगों को सक़ीफ़ पर हंसाऊंगा। इसके बाद लात पर गुर्ज़ मारकर ख़ुद ही गिर पड़े और एड़ियां पटकने लगे।

यह बनावटी दृश्य देखकर तायफ़ वालों पर हौल छा गया, कहने लगे, अल्लाह मुग़ीरह को हलाक करे, इसे देवी ने मार डाला। इतने में हज़रत मुग़ीरह उछलकर खड़े हो गए और फ़रमाया, अल्लाह तुम्हारा बुरा करे। यह तो पत्थर और मिट्टी का तमाशा है, फिर उन्होंने दरवाज़े पर चोट लगाई और उसे तोड़ दिया। इसके बाद सबसे ऊंची दीवार पर चढ़े और उनके साथ कुछ और साथी भी चढ़े, फिर उसे ढाते-ढाते ज़मीन के बराबर कर दिया, यहां तक कि उसकी ज़मीन भी खोद डाली और उसका गहना और कपड़ा निकाल लिया। यह देखकर सक़ीफ़ चकित रह गए। हज़रत ख़ालिद रज़ि० गहना और कपड़ा लेकर अपनी टीम के साथ वापस हुए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सब कुछ उसी दिन बांट दिया और नबी की मदद और दीन की बरतरी पर अल्लाह का शुक्र अदा किया।[1]

9. यमन के बादशाहों का पत्र—तबूक से नबी सल्ल० की वापसी के बाद हिमयर के बादशाह यानी हारिस बिन अब्द किलाल, नुऐम बिन अब्द किलाल

1. ज़ादुल मआद 3/26, 27, 28

और रईन हमदान और मुआफ़िर के प्रमुख नोमान बिन क़ील का पत्र आया। पत्र लाने वाला मालिक बिन मुर्रा रहावी था। इन बादशाहों ने अपने इस्लाम लाने और शिर्क और मुश्रिकों से अलगाव के अपनाने की सूचना देकर उसे भेजा था।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके पास एक जवाबी पत्र लिखकर स्पष्ट कर दिया कि ईमान वालों के अधिकार और उनकी ज़िम्मेदारियां क्या हैं? आपने उस पत्र में समझौता करने वालों के लिए अल्लाह का ज़िम्मा और उसके रसूल का ज़िम्मा भी दिया था, बशर्तेकि वे तै किया हुआ जिज़्या अदा करें। इसके अलावा आपने कुछ सहाबा को यमन रवाना फ़रमाया और हज़रत मुआज़ बिन जबल को उनका अमीर बना दिया।

10. हमदान प्रतिनिधिमंडल—यह प्रतिनिधिमंडल सन् 09 हि० में तबूक से अल्लाह के रसूल सल्ल० की वापसी के बाद सेवा में हाज़िर हुआ। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके लिए एक काग़ज़ लिखकर, जो कुछ उन्होंने मांगा था, दे दिया और मालिक बिन नम्त को उनका अमीर मुक़र्रर किया और उनकी क़ौम के जो लोग मुसलमान हो चुके थे, उनका गवर्नर बनाया और बाक़ी लोगों के पास इस्लाम की दावत देने के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को भेज दिया। वह छः महीने ठहरकर दावत देते रहे, लेकिन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल न किया।

फिर आपने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को भेजा और हुक्म दिया कि वह ख़ालिद को वापस भेज दें। हज़रत अली रज़ि० ने क़बीला हमदान के पास जाकर अल्लाह के रसूल सल्ल० का पत्र सुनाया और इस्लाम की दावत दी, तो सबके सब मुसलमान हो गए। हज़रत अली रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्ल० को उनके मुसलमान होने की ख़ुशख़बरी भेजी। आपने पत्र पढ़ा तो सज्दे में गिर गए, फिर सर उठाकर फ़रमाया, हमदान पर सलाम, हमदान पर सलाम!

11. बनी फ़ज़ारा प्रतिनिधिमंडल—यह प्रतिनिधिमंडल सन् 09 हिजरी में तबूक से नबी सल्ल० की वापसी के बाद आया। इसमें दस से कुछ ज़्यादा लोग थे और सबके सब इस्लाम ला चुके थे। इन लोगों ने अपने इलाक़े में पड़े अकाल की शिकायत की। अल्लाह के रसूल सल्ल० मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और दोनों हाथ उठाकर वर्षा की दुआ की। आपने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! अपने देश और अपने पशुओं को सेराब कर, अपनी रहमत फैला, अपने मुर्दा शहर को ज़िंदा कर। ऐ अल्लाह! हम पर ऐसी वर्षा बरसा जो हमारी फ़रियाद पूरी करे, राहत पहुंचा दे, ख़ुशगवार हो, फैली हुई सर्वव्यापी हो, जल्द आए, देर न करे, लाभप्रद हो, हानिदायक न हो। ऐ अल्लाह! रहमत की वर्षा, अज़ाब की वर्षा नहीं और न ढाने वाली, न डुबाने वाली और न मिटाने

वाली वर्षा। ऐ अल्लाह ! हमें वर्षा से सेराब कर और दुश्मनों के ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़रमा।[1]

12. नजरान मंत्रिमंडल—(नजरान मक्का से यमन की ओर सात मरहले पर एक बड़ा इलाक़ा था, जो 73 आबादियों पर सम्मिलित था। तेज़ रफ़्तार सवार एक दिन में पूरा इलाक़ा तै कर सकता था।[2] इस इलाक़े में लगभग एक लाख लड़ाकू मर्द थे जो सबके सब ईसाई धर्म के मानने वाले थे।)

नजरान का प्रतिनिधिमंडल सन् 09 हि० में आया। यह साठ लोगों पर सम्मिलित था। 24 बड़े लोग थे जिनमें से तीन तो लीडर थे—एक आक़िब, जिसके ज़िम्मे शासन था और उसका नाम अब्दुल मसीह था, दूसरा सैयद जो संस्कृति और राजनीति के मामलों का निगरां था और उसका नाम ऐहम शुरहबील था, तीसरा उस्कुफ़ (लाट पादरी) जो धार्मिक नेता था। उसका नाम अबू हारिसा बिन अलक़मा था।

प्रतिनिधिमंडल ने मदीना पहुंचकर नबी सल्ल० से मुलाक़ात की। फिर आपने उनसे कुछ प्रश्न किए और उन्होंने आपसे कुछ सवाल किए। इसके बाद आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी और क़ुरआन की आयतें पढ़कर सुनाई, लेकिन उन्होंने इस्लाम क़ुबूल न किया और मालूम किया कि आप हज़रत ईसा अलै० के बारे में क्या कहते हैं? इसके जवाब में अल्लाह के रसूल सल्ल० उस दिन पूरे दिन रुके रहे, यहां तक कि आप पर ये आयतें उतरीं—

'बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर उससे कहा हो जा, तो वह हो गया। सत्य तेरे रब की ओर से है, बस सन्देह करने वालों में से न हो। फिर तुम्हारे पास ज्ञान आ जाने के बाद, जो कोई तुमसे इस (ईसा) के बारे में हुज्जत करे तो कह दो कि आओ हम बुलाएं अपने-अपने बेटों को और अपनी-अपनी औरतों को और ख़ुद अपने आपको और फिर मुबाहला करें, (अल्लाह से गिड़गिड़ाकर दुआ करें) पस अल्लाह की लानत ठहराएं झूठों पर।' (3 : 59, 60, 61)

सुबह हुई तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इन्हीं आयतों की रोशनी में उन्हें हज़रत ईसा अलै० के बारे में अपने विचार बताये और इसके बाद दिन भर उन्हें सोच-विचार के लिए छोड़ दिया, लेकिन उन्होंने हज़रत ईसा के बारे में आपकी बात मानने से इंकार कर दिया।

---

1. ज़ादुल मआद 3/48
2. ज़ादुल मआद 8/94

फिर जब अगली सुबह हुई, जबकि प्रतिनिधिमंडल के सदस्य हज़रत ईसा अलै० के बारे में आपकी बात मानने और इस्लाम लाने से इंकार कर चुके थे, तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन्हें मुबाहले की दावत दी और हज़रत हसन व हुसैन रज़ि० समेत एक चादर में लिपटे हुए तशरीफ़ लाए। पीछे-पीछे हज़रत फ़ातिमा रज़ि० चल रही थीं।

जब प्रतिनिधिमंडल ने देखा कि आप वाक़ई बिल्कुल तैयार हैं तो अकेले में जाकर मश्विरा किया। आक़िब और सैयद दोनों ने एक दूसरे से कहा, देखो मुबाहला न करना। ख़ुदा की क़सम! अगर यह नबी है और हमने इससे एक दूसरे पर लानत कर ली तो हम और हमारे पीछे हमारी औलाद हरगिज़ सफल न होगी। धरती पर हमारा एक बाल और नाख़ून भी तबाही से न बच सकेगा। आख़िर में उनकी राय यह ठहरी कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ही को अपने बारे में मध्यस्थ बनाया जाए।

चुनांचे उन्होंने आपकी सेवा में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आपकी जो मांग हो, हम उसे मानने को तैयार हैं। इस पेशकश पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे जिज़्या लेना मंज़ूर किया और दो हज़ार जोड़े कपड़ों पर समझौता किया, एक हज़ार माह रजब में और एक हज़ार माह सफ़र में और तै किया कि हर जोड़े के साथ एक औक़िया (एक सौ बावन ग्राम चांदी) भी अदा करनी होगी। इसके बदले आपने उन्हें अल्लाह और उसके रसूल का ज़िम्मा अता फ़रमाया और दीन के बारे में पूरी आज़ादी दे दी। इस बारे में आपने उन्हें विधिवत एक लिखा काग़ज़ दे दिया।

उन लोगों ने आपसे गुज़ारिश की कि आप उनके यहां एक अमीन (अमानतदार) आदमी भेज दें। इस पर आपने समझौते का माल वसूल करने के लिए इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को रवाना फ़रमाया।

इसके बाद उनके अन्दर इस्लाम फैलना शुरू हुआ। सीरत लिखने वालों का बयान है कि सैयद और आक़िब नजरान पलटने के बाद मुसलमान हो गए। फिर नबी सल्ल० ने उनसे सदक़े और जिज़्ए लाने के लिए हज़रत अली रज़ि० को रवाना फ़रमाया और मालूम है कि सदक़ा तो मुसलमानों ही से लिया जाता है।[1]

---

1. फ़त्हुल बारी 8/94, 95, ज़ादुल मआद 3/38-41। नजरान प्रतिनिधिमंडल के विस्तृत विवरण में रिवायतों के अन्दर अच्छा भला बिखराव है और इसी वजह से कुछ शोधकों का रुझान है कि नजरान का प्रतिनिधिमंडल दोबारा मदीना आया, लेकिन हमारे नज़दीक वही बात प्रमुखता देने की है जिसे हमने संक्षेप में ऊपर दे रखा है।

बनी हनीफ़ा प्रतिनिधिमंडल—यह सन् 09 हि० में मदीना आया। इसमें मुसैलमा कज़्ज़ाब (अति झूठा) सहित सत्तरह आदमी थे।[1] मुसैलमा का वंश इस तरह है—मुसैलमा बिन समामा बिन कबीर बिन हबीब बिन हारिस। यह प्रतिनिधिमंडल एक अंसारी सहाबी के मकान पर उतरा। फिर नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हुआ, अलबत्ता मुसैलमा कज़्ज़ाब के बारे में रिवायतें अलग-अलग हैं।

तमाम रिवायतों पर सामूहिक नज़र डालने से मालूम होता है कि उसने अकड़, दंभ और सरदारी पाने का लोभ बहुत था और प्रतिनिधिमंडल के बाक़ी सदस्यों के सामने नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर न हुआ।

नबी सल्ल० ने पहले तो कथनी और करनी और अच्छे सज्जनतापूर्ण बतार्व के ज़रिए उसका दिल रखना चाहा, लेकिन जब देखा कि उस व्यक्ति पर उस बर्ताव का अच्छा असर न पड़ा, तो आपने अपने विवेक से ताड़ लिया कि उसके अन्दर शरारत (दुष्टता) है।

इससे पहले नबी सल्ल० यह सपना देख चुके थे कि आपके पास धरती के ख़ज़ाने लाकर रख दिए गए हैं और उनमें से सोने के वे कंगन आपके हाथ में आ पड़े हैं। आपको ये दोनों बहुत भारी और दुखद लगे। चुनांचे आपको वह्य की गई कि इन दोनों को फूंक दीजिए। आपने फूंक दिया तो वे दोनों उड़ गए।

इसका मतलब आपने यह बताया कि आपके बाद दो कज़्ज़ाब (परले दर्जे के झूठे) निकलेंगे, चुनांचे जब मुसैलमा कज़्ज़ाब ने अकड़ और इंकार ज़ाहिर किया—वह कहता था कि अगर मुहम्मद ने हुकूमत के कारोबार को अपने बाद मेरे हवाले करना तै किया, तो मैं उनका पालन करूंगा—तो रसूलुल्लाह सल्ल० उसके पास तशरीफ़ ले गए, उस वक़्त आपके हाथ में खजूर की एक शाखा थी और आपके साथ आपके ख़तीब (वक्ता) हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास रज़ि० थे।

मुसैलमा अपने साथियों के बीच में मौजूद था। आप उसके सर पर जा खड़े हुए, और बातें कीं। उसने कहा, अगर आप चाहें तो हम हुकूमत के मामले में आपको छोड़ दें, लेकिन अपने बाद उसको हमारे लिए तै फ़रमा दें।

आपने (खजूर की शाखा की ओर इशारा करते हुए) फ़रमाया, अगर मुझसे यह टुकड़ा चाहोगे तो तुम्हें यह भी न दूंगा और तुम अपने बारे में अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए फ़ैसले से आगे नहीं जं सकते और अगर तुमने पीठ फेरी तो अल्लाह तुम्हें

1. फ़त्हुल बारी 8/87

तोड़कर रख देगा। ख़ुदा की क़सम ! मैं तुझे वही व्यक्ति समझता हूं जिसके बारे में मुझे वह (सपना) दिखलाया गया है और यह साबित बिन क़ैस हैं जो तुम्हें मेरी ओर से जवाब देंगे, इसके बाद आप वापस चले आए।[1]

अन्त में वही हुआ, जिसका अन्दाज़ा अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने विवेक से कर लिया था, यानी मुसैलमा कज़्ज़ाब यमामा जाकर पहले तो अपने बारे में विचार करता रहा, फिर दावा किया कि उसे अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ नुबूवत के कामों में शरीक कर लिया गया है, चुनांचे उसने नुबूवत का दावा किया और विधान गढ़-गढ़कर बनाने लगा। अपनी क़ौम के लिए ज़िना और शराब हलाल कर दी और इन सब बातों के साथ-साथ अल्लाह के रसूल सल्ल० के बारे में यह गवाही भी देता रहा कि आप अल्लाह के नबी हैं।

उस व्यक्ति की वजह से उसकी क़ौम फ़िल्ने में पड़कर उसकी अनुपालक बन गई और आवाज़ में आवाज़ मिलाने लगी। नतीजा यह हुआ कि उसका मामला बहुत संगीन हो गया। उसका इतना मान-सम्मान हुआ कि उसे यमामा का रहमान कहा जाने लगा और अब उसने अल्लाह के रसूल सल्ल० को एक ख़त लिखा, मुझे इस काम में आपके साथ शरीक कर लिया गया है, आधी हुकूमत हमारे लिए और आधी क़ुरैश के लिए।

तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जवाब में लिखा, ज़मीन अल्लाह की है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसका वारिस बनाता है और अंजाम तक़्वा वालों के लिए है।[2] इब्ने मस्ऊद से रिवायत है कि इब्ने नवाहा और इब्ने असाल मुसैलमा के दूत बनकर नबी सल्ल० के पास आए थे। आपने मालूम किया, तुम दोनों गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूं ?

उन्होंने कहा, हम गवाही देते हैं कि मुसैलमा अल्लाह का रसूल है।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आया। अगर मैं किसी दूत को क़त्ल करता तो तुम दोनों को क़त्ल करता।[3]

मुसैलमा कज़्ज़ाब ने सन् 10 हि० में नुबूवत का दावा किया था और रबीउल अव्वल सन् 12 हि० में हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में यमामा

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी, बाब वफ़्द बनी हनीफ़ा और बाब क़िस्सतुल अस्वद अनसी 2/627, 628, और फ़त्हुल बारी 8/87-93
2. ज़ादुल मआद 3/31, 32
3. मुस्नद अहमद, मिश्कात 2/347

के अन्दर क़त्ल किया गया। उसका क़ातिल वह्शी था, जिसने हज़रत हमज़ा रज़ि० को क़त्ल किया था।

नुबूवत का एक दावेदार तो यह था, जिसका अंजाम यह हुआ। नुबूवत का एक दूसरा दावेदार अस्वद अनसी था, जिसने यमन में फ़साद मचा रखा था। उसे नबी सल्ल० की वफ़ात से सिर्फ़ एक दिन और एक रात पहले हज़रत फ़ीरोज़ ने क़त्ल किया। फिर आपके पास उसके बारे में वह्य आई और आपने सहाबा किराम को इस घटना की खबर दी। उसके बाद यमन से हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास बाक़ायदा ख़बर आई।[1]

14. बनू आमिर बिन सासआ प्रतिनिधिमंडल—इस प्रतिनिधिमंडल में ख़ुदा के दुश्मन और आमिर बिन तुफ़ैल, हज़रत लबीद के सौतेले भाई अरबद बिन क़ैस, ख़ालिद बिन जाफ़र और जब्बार बिन असलम शामिल थे। ये सब अपनी क़ौम के सरदार और शैतान थे। आमिर बिन तुफ़ैल वही व्यक्ति है जिसने बेरे मऊना पर सत्तर सहाबा किराम के शहीद कराया था।

इन लोगों ने जब मदीना आने का इरादा किया तो आमिर और अरबद ने आपस में साज़िश की कि नबी सल्ल० को धोखा देकर अचानक क़त्ल कर देंगे। चुनांचे जब यह प्रतिनिधिमंडल मदीना पहुंचा तो आमिर ने नबी सल्ल० से बातें शुरू कीं और अरबद घूमकर आपके पीछे पहुंचा और एक बीता तलवार म्यान से बाहर निकाली, लेकिन इसके बाद अल्लाह ने उसका हाथ रोक लिया और वह तलवार नंगी न कर सका। अल्लाह ने अपने नबी को सुरक्षित रखा। नबी सल्ल० ने उन दोनों पर बद-दुआ की, जिसका नतीजा यह हुआ कि वापसी पर अल्लाह ने अरबद और उसके ऊंट पर बिजली गिरा दी, जिससे अरबद जल मरा।

उधर आमिर एक सलूलिया औरत के यहां उतरा और इसी बीच उसकी गरदन में गिलटी निकल आयी। इसके बाद वह यह कहता हुआ मर गया कि आह! ऊंट की गिलटी जैसी गिलटी और एक सलूलिया औरत के घर में मौत?

सहीह बुख़ारी की रिवायत है कि आमिर ने नबी सल्ल० के पास आकर कहा, मैं आपको तीन बातों का अधिकार देता हूं—

1. आपके लिए घाटी के लोग हों और मेरे लिए आबादी के लोग,

---

1. फ़त्हुल बारी 8/93

2. या मैं आपके बाद आपका ख़लीफ़ा हूं।

3. वरना मैं ग़तफ़ान के एक हज़ार घोड़े और एक हज़ार घोड़ियों समेत आप पर चढ़ाई करूंगा। इसके बाद वह एक औरत के घर में प्लेग का शिकार हो गया, (जिस पर उसने दुखी होकर कहा), क्या ऊंट की गिलटी जैसी गिलटी? और वह भी बनी फ़्लां की एक औरत के घर में? मेरे पास मेरा घोड़ा लाओ, फिर वह सवार हुआ और अपने घोड़े ही पर मर गया।

15. तजीब प्रतिनिधिमंडल—यह प्रतिनिधिमंडल अपनी क़ौम के सदक़ों को, जो ग़रीबों से ज़्यादा बच गए थे, लेकर मदीना आया। मंडली में तेरह आदमी थे जो क़ुरआन और सुन्नत पूछते और सीखते थे। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से कुछ बातें मालूम कीं, तो आपने वे बातें उन्हें लिख दीं। वे ज़्यादा दिनों तक नहीं ठहरे।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन्हें उपहार दिए, तो उन्होंने अपने एक नवजवान को भेजा जो डेरे पर पीछे रह गया था। नवजवान ने सेवा में आकर अर्ज़ किया, हुज़ूर! ख़ुदा की क़सम! मुझे मेरे इलाक़े से इसके सिवा और कोई चीज़ नहीं लाई है कि आपसे मैं निवेदन करूं कि आप मेरे लिए यह दुआ फ़रमा दें कि वह मुझे अपनी बख़्शिश और रहमत से नवाज़े और मेरी मालदारी मेरे दिल में रख दे।

आपने उसके लिए यह दुअ फ़रमाई। नतीजा यह हुआ कि वह व्यक्ति सबसे ज़्यादा क़नाअत पसन्द हो गया और जब इस्लाम से पलटने की लहर चली तो सिर्फ़ यही नहीं कि वह इस्लाम पर जमा रहा, बल्कि अपनी क़ौम को वाज़ व नसीहत की, तो वह भी इस्लाम पर जमी रही।

फिर प्रतिनिधिमंडल वालों ने विदाई हज सन् 10 हि० में नबी सल्ल० से दोबारा मुलाक़ात की।

16. त्वै प्रतिनिधिमंडल—इस प्रतिनिधिमंडल के पास अरब के मशहूर घुड़सवार ज़ैदुल ख़ैल भी थे। इन लोगों ने जब नबी सल्ल० से बातें कीं और आपने उन पर इस्लाम पेश किया, तो उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और बहुत अच्छे मुसलमान हुए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ज़ैद की प्रशंसा करते हुए फ़रमाया कि मुझसे अरब को जिस व्यक्ति का गुण बयान किया गया और फिर वह मेरे पास आया तो मैंने उसे उसकी शोहरत से कुछ कमतर ही पाया, मगर इसके ख़िलाफ़ ज़ैदुल ख़ैल की शोहरत उनकी ख़ूबियों को नहीं पहुंच सकी और आपने उनका नाम ज़ैदुल ख़ैर रख दिया।

इस तरह सन् 09 हि० और सन् 10 हि० में एक के बाद एक प्रतिनिधि-

मंडल आए, सीरत लिखने वालों ने यमन, अज़्द, क़ुज़ाआ के बनी साद, हुज़ैम, बनी आमिर बिन क़ैस, बनी असद, बहरा, ख़ौलान, मुहारिब, बनी हारिस बिन काब, ग़ामिद, बनी मुन्तफ़िक़, सलामान, बनी अबस, मुज़ैना, मुराद, ज़ुबैद, कन्दा, ज़ीमर्रा, ग़स्सान, बनी ऐश, और नख़अ के प्रतिनिधिमंडलों का उल्लेख किया है। नख़अ का प्रतिनिधिमंडल अन्तिम प्रतिनिधिमंडल था, जो मुहर्रम सन् 11 के बीच में आया था और दो सौ आदमियों पर सम्मिलित था। बाक़ी बहुत से प्रतिनिधिमंडलों का आना सन् 09 हि० और सन् 10 हि० में हुआ था। सिर्फ़ कुछ प्रतिनिधिमंडल सन् 11 हि० तक आए थे।

इन प्रतिनिधिमंडलों के बराबर आते रहने से पता लगता है कि उस वक़्त इस्लामी दावत कितनी फैली-बढ़ी और कितनी लोकप्रिय हुई। इससे यह भी अन्दाज़ा होता है कि अरब के लोग मदीना को कितना सम्मान देते थे, यहां तक कि उसके सामने समर्पण कर देने के सिवा कोई रास्ता न देखते थे।

सच तो यह है कि मदीना अरब प्रायद्वीप की राजधानी बन चुका था और किसी के लिए उससे नज़र चुराना मुम्किन न था। अलबत्ता हम यह नहीं कह सकते कि इन सब लोगों के दिलों में इस्लाम घर कर चुका था, क्योंकि इनमें अभी बहुत से ऐसे अक्खड़ बद्दू थे जो सिर्फ़ अपने सरदारों को देखकर मुसलमान हो गए थे, वरना उनमें क़त्ल और लूटमार का जो रुझान जड़ पकड़ चुका था, उससे पाक-साफ़ नहीं हुए थे और अभी इस्लामी शिक्षाओं ने उन्हें पूरे तौर पर सभ्य नहीं बनाया था।

चुनांचे क़ुरआन मजीद सूरः तौबा में उनके कुछ लोगों की विशेषताओं का उल्लेख यों करता है—

'बद्दू कुफ़्र और निफ़ाक़ में ज़्यादा सख़्त हैं और इस बात के ज़्यादा लायक़ हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है, उसकी सीमाओं को न जानें और अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है और कुछ बद्दू जो कुछ ख़र्च करते हैं, उसे जुर्माना समझते हैं और तुम पर गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं। उन्हीं पर बुरी गर्दिश है और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।'

(9 : 97-98)

जबकि कुछ दूसरे लोगों की प्रशंसा की गई है और उनके बारे में यह फ़रमाया गया है कि—

'और कुछ अरब अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और जो कुछ ख़र्च करते हैं, उसे अल्लाह की नज़दीकी और रसूल की दुआओं का ज़रिया बताते हैं। याद रहे कि यह उनके लिए नज़दीकी का ज़रिया है। बहुत जल्द

अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।'

(9 : 99)

जहां तक मक्का, मदीना, सक़ीफ़, यमन और बहरैन के बहुत से शहर के रहने वालों का ताल्लुक़ है, तो उनके अन्दर इस्लाम दृढ़ था और उन्हीं में से बड़े सहाबा और मुसलमान पेशवा हुए।[1]

---

1. यह बात ख़ज़री ने मुहाज़रात 1/144 में कही है और जिन प्रतिनिधिमंडलों का उल्लेख किया गया या जिनकी ओर इशारा किया गया, उनके विस्तृत विवरण के लिए देखिए—सहीह बुख़ारी 1/13, 2/626-630, इब्ने हिशाम 2/501-503, 510-514, 537-542, 560-601, ज़ादुल मआद 3/26-60, फ़त्हुलबारी 8/83-103, रहमतुल लिल आंलमीन 1/184-217

दावत की सफलता और उसका प्रभाव

अब हम अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी के अन्तिम दिनों के वर्णन तक पहुंच रहे हैं, लेकिन इस वर्णन के लिए लेखनी को आगे बढ़ाने से पहले उचित दिखाई देता है कि तनिक ठहरकर आपके इस शानदार कारनामे पर एक उचटती नज़र डालें, जो आपके जीवन का सार है और जिसकी बुनियाद पर आपको तमाम नबियों और पैग़म्बरों में यह नुमायां दर्जा मिला कि अल्लाह ने आपके सर पर पहलों और पीछे के लोगों के नेतृत्व का मुकुट रख दिया।

आपसे कहा गया कि—

'ऐ चादर ओढ़ने वाले ! रात में खड़े हो, मगर थोड़ा।' (मुज़्ज़म्मिल)

'ऐ कम्बल ओढ़ने वाले ! उठ और लोगों को संगीन अंजाम से डरा दे।' (मुद्दस्सिर)

फिर क्या था ? आप उठ खड़े हुए और अपने कंधे पर इस धरती की सबसे बड़ी अमानत का भारी बोझ उठाए बराबर खड़े रहे, यानी सारी मानवता का बोझ, सारे अक़ीदे का बोझ और अलग-अलग मैदानों में जंग व जिहाद और कोशिशों का बोझ।

आपने इंसानी अन्तरात्मा के मैदान में लडाई और जिहाद और कोशिशों का बोझ उठाया जो अज्ञानता के अंधविश्वासों में डूबा हुआ था, जिसे धरती और उसके अनेकानेक आकर्षण के भार ने बोझल कर रखा था, जो वासनाओं की बेड़ियों और फंदों से जकड़ा हुआ था और जब इस अन्तरात्मा को अपने कुछ साथियों की शक्ल में अज्ञानता और ज़मीनी ज़िंदगी के तह दर तह बोझ से आज़ाद कर लिया, तो एक दूसरे मैदान में एक दूसरी लड़ाई, बल्कि लड़ाई पर लड़ाई शुरू कर दी, यानी दावते इलाही के वे दुश्मन जो दावत और उस पर ईमान वालों के ख़िलाफ़ टूटे पड़ रहे थे और इस पवित्र पौधे को पनपने, मिट्टी के अन्दर जड़ पकड़ने, फ़िज़ा में शाख़ाएं लहराने और फलने-फूलने से पहले उसको शुरू ही में मार डालना चाहते थे, दावत के इन दुश्मनों के साथ आपने लगातार लड़ाइयां शुरू कीं और अभी आप अरब प्रायद्वीप की लड़ाइयों से फ़ारिग़ न हुए थे कि रूम ने इस नई उम्मत को दबोचने के लिए उसकी सीमाओं पर तैयारियां शुरू कर दीं।

फिर इन तमाम कार्रवाइयों के बीच अभी पहली लड़ाई—यानी अन्तरात्मा की लड़ाई ख़त्म नहीं हुई थी, क्योंकि वह यह हमेशा की लड़ाई है, इसमें शैतान से

मुक़ाबला है और वह मानव-अन्तरात्मा में घुसकर अपनी सरगर्मियां जारी रखता है और एक क्षण के लिए ढीला नहीं पड़ता।

मुहम्मद सल्ल० अल्लाह की ओर बुलाने के काम में लगे हुए थे और अलग-अलग मैदान की अलग-अलग लड़ाइयों में व्यस्त थे। दुनिया आपके क़दमों पर ढेर थी, पर आप तंगी और तुर्शी से गुज़र-बसर कर रहे थे। ईमान वाले आपके आस-पास अम्न और राहत का साया फैला रहे थे, पर आप जद्दोजेहद और मशक़्क़त अपनाए हुए थे, लगातार और कड़ी मेहनत से वास्ता था, लेकिन इन सब पर आपने बेहतरीन क़िस्म का सब्र अपना रखा था। रात में खड़े रहते (यानी नमाज़ में) थे, अपने रब की इबादत करते थे, उसके क़ुरआन की ठहर-ठहरकर क़िरात करते थे और सारी दुनिया में कटकर उसकी ओर मुतवज्जह हो जाते थे, जैसा कि आपको हुक्म दिया गया था।[1]

इस तरह आपने बराबर और लगातार लड़ने में बीस वर्ष से ऊपर गुज़ार दिए और इस बीच आपको कोई एक मामला दूसरे मामले से ग़ाफ़िल न कर सका, यहां तक कि इस्लामी दावत इतने बड़े पैमाने पर सफल हुई कि अक़्लें हैरान रह गई। सारा अरब प्रायद्वीप आप के आधीन हो गया। उसके क्षितिज से अज्ञानता की धूल छट गई, बीमार अक़्लें तन्दुरुस्त हो गई, यहां तक कि बुतों को छोड़ बल्कि तोड़ दिया गया। तौहीद की आवाज़ से फ़िज़ा गूंजने लगी और नए ईमान से जीवन पाए हुए मैदान अज़ानों से कांपने लगे और उसके फैलाव को अल्लाहु अक्बर की आवाज़ें चीरने लगीं। क़ारी क़ुरआन मजीद की तिलावत करते और अल्लाह के आदेशों का पालन करते हुए उत्तर-दक्षिण में फैल गए।

बिखरी हुई क़ौमें और क़बीले एक हो गए। इंसान बन्दों की बन्दगी से निकलकर अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल हो गया। अब न कोई बड़ा है, न छोटा, न स्वामी है और न दास, न शासक है और न शासित, न ग़ालिब है, न मज़्लूम, बल्कि सारे लोग अल्लाह के बन्दे हैं और आपस में भाई-भाई हैं। एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं और अल्लाह के हुक्मों को बजा लाते हैं। अल्लाह ने उनसे अज्ञानता का गर्व, अहंकार और बाप-दादा पर घमंड का अन्त कर दिया है। अब अरबी को ग़ैर-अरबी पर और ग़ैर-अरबी को अरबी पर, गोरे को काले पर, काले को गोरे पर कोई श्रेष्ठता नहीं। श्रेष्ठता की कसौटी सिर्फ़ तक़्वा है, वरना सारे लोग आदमी की औलाद हैं और आदम मिट्टी से थे।

तात्पर्य यह कि इस दावत की वजह से अरबी एकता, मानवीय एकात्मता,

---

1. सैयद क़ुत्ब फ़ी ज़िलालिल क़ुरआन 29/168, 169

और सामूहिक न्याय वजूद में आ गया। मानवता का दुनिया की समस्याओं और आख़िरत के मामलों में कामियाबी का रास्ता मिला। दूसरे शब्दों में ज़माने की रफ़्तार बदल गई, धरती का चेहरा बदल गया, इतिहास की धारा मुड़ गई और सोचने की शैली बदल गई।

इस दावत से पहले दुनिया पर अज्ञानता छाई हुई थी, उसकी अन्तरात्मा बदबूदार थी और आत्मा दुर्गंध फैला रही थी। मूल्य बदल गए थे, ज़ुल्म और ग़ुलामी का दौर-दौरा था। अशान्ति छाई हुई थी, इस पर कुफ़्र और गुमराही के अंधे और मोटे परदे पड़े हुए थे, हालांकि आसमानी धर्म और दीन मौजूद थे, पर उनमें बिगाड़ ने जगह पा ली थी और कमज़ोरी पैदा हो गई थी उसकी पकड़ ख़त्म हो चुकी थी और वे बेजान रस्म व रिवाज का योग बनकर रह गए थे।

जब इस दावत ने मानव-जीवन पर अपना प्रभाव दिखाया तो मानव-आत्मा को अंधविश्वास, बन्दगी व ग़ुलामी, बिगाड़ और बदबू और गन्दगी और अनारकी से निजात दिलाई और इंसानी समाज को ज़ुल्म, सरकशी, बिखराव, बर्बादी, वर्गीय भेदभाव, शासकों के अत्याचार और काहिनों के रुसवा करने वाले दबावों से छुटकारा दिलाया और दुनिया को पाकी, सफ़ाई, बनाव, आज़ादी, ईमान, मारफ़त, यक़ीन, न्याय, और सत्कर्म की बुनियादों पर ज़िंदगी को आगे बढ़ाने, विकसित करने और हक़दार को हक़ पहुंचाने के लिए खड़ा किया।[1]

इन तब्दीलियों की वजह से अरब प्रायद्वीप ने एक ऐसी बरकत वाली उठान देखी जिसकी मिसाल इंसानी वजूद के किसी दौर में नहीं मिलती और इस प्रायद्वीप का इतिहास अपनी उम्र के उन दिनों में ऐसा जगमगाया कि इससे पहले कभी नहीं जगमगाया था।

---

1. वही, सैयद कुत्ब, मुक़द्दमा माज़ा खसिरत आलम, बिइन्हितातिल मुस्लिमीन पृ० 15

विदाई हज

दावत व तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) का काम पूरा हो गया और तौहीद (अल्लाह ही को माबूद मानना), रिसालत (मुहम्मद सल्ल० को आख़िरी रसूल मानना) और आख़िरत की बुनियाद पर एक नए समाज का निर्माण अमल में आ गया, अब मानो ग़ैबी आवाज़ लगाने वाला आपके दिल और दिमाग़ को यह एहसास दिला रहा था कि दुनिया में आपके ठहरने का ज़माना ख़त्म होने के क़रीब है।

चुनांचे आपने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० को सन् 10 हि० में यमन का गवर्नर बनाकर रवाना फ़रमाया। विदा करते हुए और बातों के साथ यह भी फ़रमाया, ऐ मुआज़ ! शायद तुम मुझसे मेरे इस साल के बाद न मिल सकोगे, बल्कि शायद मेरी इस मस्जिद और मेरी क़ब्र के पास से गुज़रोगे और हज़रत मुआज़ रज़ि० यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की जुदाई के ग़म से रोने लगे।

वास्तव में अल्लाह चाहता था कि अपने पैग़म्बर सल्ल० को इस दावत का अच्छा फल दिखा दे, जिसके रास्ते में आपने बीस बरस से ज़्यादा मुद्दत तक तरह-तरह की कठिनाइयों और मशक़्क़तों को सहन किया था और उसकी शक्ल यह हो कि आप हज के मौक़े पर मक्का के पास अरब क़बीलों से मुताल्लिक़ लोगों और प्रतिनिधियों के साथ जमा हों, फिर वे आपसे दीन के आदेश और शरीअत मालूम करें और उनसे यह गवाही लें कि आपने अमानत अदा कर दी, रब के पैग़ाम को पहुंचा दिया और उम्मत की ख़ैरख़्वाही का हक़ अदा फ़रमा दिया।

ख़ुदा की इस मंशा के मुताबिक़ नबी सल्ल० ने जब तारीख़ी (ऐतिहासिक) हज के लिए अपने इरादे का एलान फ़रमाया, तो अरब जत्थ के जत्थ पहुंचना शुरू हो गए। हर एक की आरज़ू थी कि वह अल्लाह के रसूल सल्ल० के पदचिह्नों को अपने लिए रास्ते का निशान बनाए और आपका अनुपालन करे।[1]

फिर सनीचर के दिन जबकि ज़ीक़ादा में चार दिन बाक़ी थे, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कूच की तैयारी फ़रमाई।[2]

---

1. यह बात सहीह मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत की गई है। देखिए बाब हज्जततुन्नबी सल्ल० 1/394
2. हाफ़िज़ इब्ने हजर ने इसकी बहुत अच्छी खोज की है और कुछ रिवायतों में यह आया है कि ज़ीक़ादा के पांच दिन बाक़ी थे, तब आप रवाना हुए। इसे सही भी किया है, देखिए फ़त्हुल बारी 8/104

बालों में कंघी की, तेल लगाया, तहबंद पहना, चादर ओढ़ी, क़ुरबानी के जानवरों को क़लादा पहनाया और ज़ुहर के बाद कूच फ़रमा दिया और अस्र से पहले ज़ुल हुलैफ़ा पहुंच गए। वहां अस्र की नमाज़ दो रक्अत पढ़ी और रात भर ठहरे रहे। सुबह हुई तो सहाबा किराम से फ़रमाया, रात मेरे पालनहार की ओर से एक आने वाले ने आकर कहा, इस मुबारक घाटी में नमाज़ पढ़ो और कहो, हज में उमरा है।[1]

फिर ज़ुहर की नमाज़ से पहले आपने एहराम के लिए स्नान किया। इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० ने आपके पाक जिस्म और मुबारक सर में अपने हाथ से ज़रीरा और मुश्क भरी ख़ुशबू लगाई। ख़ुशबू की चमक आपकी मांग और दाढ़ी में दिखाई पड़ती थी, पर आपने यह ख़ुशबू धोई नहीं, बल्कि बाक़ी रखी।

फिर अपना तहबन्द पहना, चादर ओढ़ी, दो रक्अत ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी, इसके बाद मुसल्ले ही पर हज और उमरा दोनों का एक साथ एहराम बांधते हुए लब्बैक की आवाज़ बुलन्द की, फिर बाहर तशरीफ़ लाए, क़सवा ऊंटनी पर सवार हुए और दोबारा लब्बैक की आवाज़ बुलन्द की। इसके बाद ऊंटनी पर सवार खुले मैदान में तशरीफ़ ले गए, तो वहां भी लब्बैक पुकारा।

इसके बाद आपने अपना सफ़र जारी रखा। हफ़्ते बाद जब आप शाम को मक्का के क़रीब पहुंचे, तो ज़ीतुवा में ठहर गए। वहीं रात गुज़ारी और फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर ग़ुस्ल फ़रमाया, फिर मक्के में सुबह-सुबह दाख़िल हुए। यह इतवार 4 ज़िलहिज्जा का दिन था, रास्ते में आठ रातें गुज़री थीं। (औसत रफ़्तार से इस दूरी का यही हिसाब है) मस्जिदे हराम पहुंचकर आपने पहले ख़ाना काबा का तवाफ़ किया, फिर सफ़ा और मर्वः के बीच सई की, पर एहराम नहीं खोला, क्योंकि आपने हज व उमरा का एहराम एक साथ बांधा था और अपने साथ हदयि (क़ुर्बानी के जानवर) साथ लाए थे।

तवाफ़ व सई से फ़ारिग़ होकर आप ऊपरी मक्का में जहून के पास ठहरे, लेकिन दोबारा हज के तवाफ़ के सिवा कोई और तवाफ़ नहीं किया।

आपके जो सहाबा किराम अपने साथ हदयि (क़ुर्बानी का जानवर) नहीं लाए थे, आपने उन्हें हुक्म दिया कि अपना एहराम उमरे में बदल दें और बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा और मर्वः में सई करके पूरी तरह हलाल हो जाएं। लेकिन चूंकि आप ख़ुद हलाल नहीं हो रहे थे, इसलिए सहाबा किराम को चिन्ता हुई।

आपने फ़रमाया, अगर मैं आपने मामले की वह बात पहले जान गया होता,

1. इसे बुख़ारी ने हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत किया है 1/207

जो बाद में मालूम हुई तो मैं हदयि न लाता और अगर मेरे साथ हदयि न होती तो मैं भी हलाल हो जाता। आपका यह इर्शाद सुनकर सहाबा किराम ने सर झुका दिया और जिनके पास हदयि न थी, वे हलाल हो गए।

आठ ज़िलहिज्जा, तर्वीया के दिन, आप मिना तशरीफ़ ले गए और वहां 9 ज़िलहिज्जा की सुबह तक ठहरे रहे। ज़ुहर, अस्र, मग़िरब, इशा और फ़ज्र (पांच वक़्त की) नमाज़ें वहीं पढ़ीं। फिर इतनी देर रुके रहे कि सूरज निकला। इसके बाद अरफ़े को चल पड़े। वहां पहुंचे तो निमरा घाटी में क़ुब्बा तैयार था। वहीं उतरे।

जब सूरज ढल गया, तो आपके हुक्म से क़सवा पर कजावा करता गया और घाटी के बीच में तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त आपके चारों ओर एक लाख चौबीस हज़ार या एक लाख चवालीस हज़ार इंसानों का समुद्र ठाठें मार रहा था। आपने उनके बीच ख़ुत्बा (वक्तव्य) इर्शाद फ़रमाया। आपने फ़रमाया—

लोगो! मेरी बात सुन लो। क्योंकि मैं नहीं जानता, शायद अपने इस साल के बाद इस जगह पर तुमसे कभी न मिल सकूंगा।[1]

तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल एक दूसरे पर इसी तरह हराम है, जिस तरह तुम्हारे आज के दिन की, जारी महीने की और मौजूदा शहर की हुर्मत है। सुन लो, अज्ञानता की हर चीज़ मेरे पांव तले रौंद दी गई। अज्ञानता के ख़ून भी ख़त्म कर दिए गए और हमारे खून में से पहला ख़ून जिसे मैं ख़त्म कर रहा हूं, वह रबीआ बिन हारिस के बेटे का ख़ून है—यह बच्चा बनू साद में दूध पी रहा था कि इन्हीं दिनों में क़बीला हुज़ैल ने उसे क़त्ल कर दिया और अज्ञानता का सूद (ब्याज) ख़त्म कर दिया गया और हमारे सूद में से पहला सूद जिसे मैं ख़त्म कर रहा हूं, वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है। अब यह सारे का सारा सूद ख़त्म है।

हां, औरतों के बारे में अल्लाह से डरो, क्योंकि तुमने उन्हें अल्लाह की अमानत के साथ लिया है और अल्लाह के कलिमे के ज़रिए हलाल किया है। उन पर तुम्हारा हक़ यह है कि वे तुम्हारे बिस्तर पर किसी ऐसे आदमी को न आने दें जो तुम्हें गवारा नहीं। अगर वे ऐसा करें तो तुम उन्हें मार सकते हो, लेकिन तेज़ मार न मारना और तुम पर उनका हक़ यह है कि तुम उन्हें भले तरीक़े से खिलाओ और पहनाओ।

---

1. इब्ने हिशाम 2/603

और मैं तुममें से ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूं कि अगर तुमने उसे मज़बूती से पकड़े रखा तो इसके बाद हरगिज़ गुमराह न होगे और वह है अल्लाह की किताब।[1]

लोगो, याद रखो, मेरे बाद कोई नबी नहीं और तुम्हारे बाद कोई उम्मत नहीं, इसलिए अपने रब की इबादत करना, पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ना, रमज़ान के रोज़े रखना, ख़ुशी-ख़ुशी अपने माल की ज़कात देना, अपने पालनहार के घर का हज करना और अपने शासकों की बात मानना। ऐसा करोगे तो अपने पालनहार की जन्नत में दाख़िल होगे।[2]

और तुमसे मेरे बारे में पूछा जाने वाला है, तो तुम लोग क्या कहोगे?

सहाबा ने कहा, हम गवाही देते हैं कि आपने तब्लीग़ कर दी, पैग़ाम पहुंचा दिया, और ख़ैरख़्वाही क हक़ अदा फ़रमा दिया।

यह सुनकर आपने शहादत की उंगली को आसमान की ओर उठाया और लोगों की ओर झुकाते हुए तीन बार फ़रमाया, ऐ अल्लाह! गवाह रह।[3]

आपके इर्शाद को रबीआ बिन उमैया बिन ख़ल्फ़ अपनी ऊंची आवाज़ से लोगों तक पहुंचा रहे थे।[4] जब आप ख़ुत्बे से फ़ारिग़ हो चुके तो अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसन्द कर लिया।'

(5 : 3)

जब यह आयत उतरी तो हज़रत उमर रज़ि० रोने लगे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, क्यों रोते हो?

कहा, हम लोग अपने दीन के ताल्लुक़ से ज़्यादती में थे, लेकिन अब जबकि वह मुकम्मल हो गया है तो जो चीज़ मुकम्मल हो जाती है, घटने लगती है। आपने फ़रमाया, तुमने सच कहा।[5]

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब हज्जतुन्नबी 1/397
2. मादनुल आमाल, हदीस न० 1108, 1109, इब्ने जरीर, इब्ने माजा, इब्ने असाकिर, रहमतुल लिल आलमीन 1/263
3. सहीह मुस्लिम 1/397
4. इब्ने हिशाम 2/605
5. इसे इब्ने अबी शैबा और इब्ने जरीर ने रिवायत किया है। देखिए तफ़्सीर इब्ने कसीर 3/215 और अद्दुर्रुल मंसूर 2/456

ख़ुत्बे के बाद हज़रत बिलाल रज़ि० ने अज़ान और फिर इक़ामत कही। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद हज़रत बिलाल ने फिर इक़ामत कही और आपने अस्र की नमाज़ पढ़ाई और इन दोनों नमाज़ों के बीच कोई और नमाज़ नहीं पढ़ी। इसके बाद सवार होकर आप अपने ठहरने की जगह पर तशरीफ़ ले गए। अपनी ऊंटनी क़सवा का पेट चट्टानों की ओर किया और जबले मशात (पैदल चलने वालों की राह में वाक़े रेतीले तोदे) को सामने किया और क़िब्ला रुख़ लगातार (इसी हालत में) ठहरे रहे, यहां तक कि सूरज डूबने लगा।

थोड़ा पीलापन ख़त्म हुआ, फिर सूरज की टिकिया ग़ायब हो गई। इसके बाद आपने हज़रत उसामा रज़ि० को पीछे हटाया और वहां से रवाना होकर मुज़दलफ़ा तशरीफ़ लाए। मुज़दलफ़ा में मग़रिब और इशा की नमाज़ें एक अज़ान और दो इक़ामत से पढ़ीं। बीच में कोई नमाज़ नहीं पढ़ी। इसके बाद आप लेट गए और फ़ज्र होने तक लेटे रहे।

अलबत्ता सुबह होते ही अज़ान व इक़ामत के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। इसके बाद क़सवा पर सवार होकर मशअरे हराम तशरीफ़ लाए और क़िब्ला रुख़ होकर अल्लाह से दुआ की और उसकी तक्बीर व तह्लील और तौहीद के कलिमे कहे। यहां इतनी देर तक ठहरे रहे कि ख़ूब उजाला हो गया। इसके बाद सूरज निकलने से पहले पहले मिना के लिए रवाना हो गए और अब की बार हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि० को अपने पीछे सवार किया।

बत्ने मुहस्सिर में पहुंचे तो सवारी को ज़रा तेज़ी से दौड़ाया। फिर जो बीच का रास्ता जमरा कुबरा पर निकलता था, उससे चलकर जमरा कुबरा पर जा पहुंचे। उस ज़माने में वहां एक पेड़ भी था और उस जमरा कुबरा को जमरा अक़बा और जमरा ऊला भी कहते हैं। फिर आपने जमरा कुबरा को सात कंकरियां मारीं। हर कंकरी के साथ तक्बीर कहते जाते थे। कंकरियां छोटी-छोटी थीं, जिन्हें चुटकी में लेकर चलाया जा सकता था। आपने ये कंकरियां बत्ने वादी में खड़े होकर मारी थीं।

इसके बाद आप क़ुर्बानगाह तशरीफ़ ले गए और अपने मुबारक हाथ से 63 ऊंट ज़िब्ह किए, फिर हज़रत अली रज़ि० को सौंप दिया और उन्होंने बाक़ी 37 ऊंट ज़िब्ह किए, इस तरह सौ ऊंट की तायदाद पूरी हो गई। आपने हज़रत अली को भी अपनी हदयि (क़ुर्बानी) में शरीक फ़रमा लिया था।

इसके बाद आपके हुक्म से हर ऊंट का एक-एक टुकड़ा काटकर हांडी में डाला, और पकाया गया, फिर आपने और हज़रत अली ने इस गोश्त में से कुछ खाया और उसका शोरबा पिया।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० सवार होकर मक्का तशरीफ़ ले गए, बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। (इसे तवाफ़े इफ़ाज़ा कहते हैं) और मक्का ही में ज़ुहर की नमाज़ अदा फ़रमाई, फिर (ज़मज़म) के कुंएं पर) बनू अब्दुल मुत्तलिब के पास तशरीफ़ ले गए, वे हाजियों को ज़मज़म का पानी पिला रहे थे। आपने फ़रमाया, बनू अब्दुल मुत्तलिब ! तुम लोग पानी खींचो। अगर यह डर न होता कि पानी पिलाने के इस काम में लोग तुम्हें क़ाबू में कर लेंगे, तो भी मैं तुम लोगों के साथ खींचता, यानी अगर सहाबा किराम रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० को ख़ुद पानी खींचते हुए देखते तो हर सहाबी ख़ुद पानी खींचने की कोशिश करता और इस तरह हाजियों को ज़मज़म पिलाने का जो शरफ़ बनू अब्दुल मुत्तलिब को हासिल था, उसकी व्यवस्था उनके क़ाबू में न रह जाती। चुनांचे बनू अब्दुल मुत्तलिब ने आपको एक डोल पानी दिया और आपने उसमें से ख़्वाहिश के मुताबिक़ पिया।[1]

आज ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ थी। नबी सल्ल० ने आज भी दिन चढ़े (चाश्त के वक़्त) एक ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया था। ख़ुत्बे के वक़्त आप ख़च्चर पर सवार थे और हज़रत अली रज़ि० आपके इर्शाद सहाबा को सुना रहे थे। सहाबा किराम कुछ बैठे और कुछ खड़े थे।[2]

आपने आज के ख़ुत्बे में भी कल की कई बातें दोहराईं। सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में हज़रत अबूबक्र रज़ि० का यह बयान रिवायत किया गया है कि नबी सल्ल० ने हमें यौमुन्नह्र (दस ज़िलहिज्जा) को ख़ुत्बा दिया, फ़रमाया—

'ज़माना घूम-फिरकर अपनी उसी दिन की शक्ल को पहुंच गया है जिस दिन अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया था। साल बारह महीने का है, जिनमें से चार महीने हराम के हैं—तीन लगातार यानी ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम और एक रजब मुज़र जो जुमादल आख़र और शाबान के दर्मियान में है।'

आपने यह भी फ़रमाया कि यह कौन-सा महीना है ?

हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० बेहतर मानते हैं। इस पर आप ख़ामोश रहे, यहां तक कि हमने समझा कि आप इसका कोई और नाम रखेंगे। लेकिन फिर आपने फ़रमाया, क्या यह ज़िलहिज्जा नहीं है ?

हमने कहा, क्यों नहीं ?

आपने फ़रमाया, यह कौन सा शहर है ?

हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। इस पर आप

---

1. मुस्लिम अन् जाबिर बाब हज्जतुन्नबी सल्ल० 1/397-400
2. अबू दाऊद, बाब अय-य वक़्तिन यख़्तबु यौमन्नहरि 1/270

ख़ामोश रहे, यहां तक कि हमने समझा आप इसका कोई और नाम रखेंगे।

मगर आपने फ़रमाया, क्या यह बलदा (मक्का) नहीं है?

हमने कहा, क्यों नहीं?

आपने फ़रमाया, अच्छा तो यह दिन कौन-सा है?

हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० बेहतर जानते हैं। इस पर आप ख़ामोश रहे, यहां तक कि हमने समझा आप इसका कोई और नाम रखेंगे? मगर आपने फ़रमाया, क्या यह यौमुन्नह्र (क़ुरबानी का दिन, यानी दस ज़िलहिज्जा) नहीं है?

हमने कहा, क्यों नहीं?

आपने फ़रमाया, अच्छा तो सुनो कि तुम्हारा ख़ून, तुम्हाला माल और तुम्हारी आबरू एक दूसरे पर ऐसे ही हराम है, जैसे तुम्हारे इस शहर और तुम्हारे इस महीने में तुम्हारे आज के दिन की हुर्मत है।

और तुम लोग बहुत जल्द अपने पालनहार से मिलोगे और वह तुमसे तुम्हारे कामों के बारे में पूछेगा, इसलिए देखो, मेरे बाद पलटकर गुमराह न हो जाना कि आपस में एक दूसरे की गरदनें मारने लगो। बताओ, क्या मैंने तब्लीग़ कर दी?

सहाबा ने कहा, हां।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! गवाह रह, जो व्यक्ति मौजूद है, वह उन लोगों तक मेरी बातें पहुंचा दे जो मौजूद नहीं हैं, क्योंकि कुछ वे लोग जिन तक (ये बातें) पहुंचाई जाएंगी, वे कुछ (मौजूदा) सुनने वालों से कहीं ज़्यादा इन बातों की ऊंच-नीच को समझ सकेंगे।[1]

एक रिवायत में है कि आपने उस ख़ुत्बे में यह भी फ़रमाया, याद रखो, कोई भी जुर्म करने वाला अपने सिवा किसी और पर जुर्म नहीं करता (यानी इस जुर्म के बदले में कोई और नहीं, बल्कि ख़ुद मुजरिम ही पकड़ा जाएगा।) याद रखो, कोई जुर्म करने वाला अपने बेटे पर या कोई बेटा अपने बाप पर जुर्म नहीं करता, (यानी बाप के जुर्म में बेटे को या बेटे के जुर्म में बाप को नहीं पकड़ा जाएगा) याद रखो, शैतान निराश हो चुका है कि अब तुम्हारे इस शहर में उसकी पूजा की जाए, लेकिन अपने जिन कर्मों को तुम लोग तुच्छ समझते हो, इसका पालन किया जाएगा और वह इसी से राज़ी होगा।[2]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ख़ुत्बा अय्यामि मिना 1/234
2. तिर्मिज़ी 2/38, 135, इब्ने माजा, किताबुल हज, मिश्कात 1/234

इसके बाद आप तशरीक़ के दिनों में (यानी 11, 12, 13 ज़िलहिज्जा की तारीख़ों में) मिना में ठहरे रहे। इस बीच आप हज की रस्में भी अदा कर रहे थे, और लोगों को शरीअत के हुक्म भी सिखा रहे थे, अल्लाह का ज़िक्र भी फ़रमा रहे थे। इब्राहीमी मिल्लत के हदयि की सुन्नतें भी क़ायम कर रहे थे और शिर्क के निशानों का सफ़ाया भी फ़रमा रहे थे।

आपने तशरीक़ के दिनों में भी एक दिन ख़ुत्बा दिया। चुनांचे सुनने अबी दाऊद में रिवायत है कि हज़रत सरा बिन्त बनहान रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें रऊस के दिन[1] ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया क्या यह तशरीक़ के दिनों के बीच का दिन नहीं है।[2] आपका आज का ख़ुत्बा भी कल (यौमुन्नह्र) के ख़ुत्बे जैसा था और यह ख़ुत्बा सूरः नस्र के उतरने के बाद दिया गया था।

तशरीक़ के दिनों के अन्त में दूसरे यौमुन्नह्र यानी 13 ज़िलहिज्जा को नबी सल्ल० ने मिना से कूच फ़रमाया और अबतह घाटी के ख़ीफ़ बनी कनाना में ठहरे। दिन का बाक़ी हिस्सा और रात वहीं गुज़ारी और ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ें वहीं पढ़ीं, अलबत्ता इशा के बाद एक नींद सोकर उठे, फिर सवार होकर बैतुल्लाह तशरीफ़ ले गए और विदाई तवाफ़ फ़रमा आए।

और अब हज के तमाम मनासिक से फ़ारिग़ होकर आपने सवारी का रुख़ मदीना मुनव्वरा की राह पर डाल दिया, इसलिए नहीं कि वहां पहुंचकर आराम फ़रमाएं, बल्कि इसलिए कि अब फिर अल्लाह के लिए अल्लाह की राह में एक नई जद्दोजेहद की शुरूआत करें।[3]

---

1. यानी 12 ज़िलहिज्जा (औनुल माबूद 2/143)
2. अबू दाऊद, बाब अय्यु यौमिन यख़तबु बिमिना 1/269
3. विदाई हज के विवरण के लिए देखिए, सहीह बुख़ारी, किताबुल मनासिक भाग 1, भाग 2/631, सहीह मुस्लिम बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०, फ़तहुल बारी, भाग 3, शरह किताबुल मनासिक और भाग 8/103-110, इब्ने हिशाम 3/601-605, ज़ादुल मआद 1/196, 218-240